खंड 2 अंक :2 अप्रैल-जून 2026
त्रैमासिक ई-शैक्षिक पत्रिका

मूल्य :अमूल्य

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी

7 साल का बेमिसाल सफ़र

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

शिक्षक गाथा

विद्यालय गाथा

डिजिटल दुनिया

छात्र गाथा

नवाचार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए QR कोड को स्कैन करें

अस्वीकरण / कॉपीराइट सूचना

प्रज्ञानिका एक त्रैमासिक ई-शैक्षिक पत्रिका है, जिसका प्रकाशन टीचर्स ऑफ़ बिहार (Teachers of Bihar) द्वारा किया जाता है। इस पत्रिका का उद्देश्य शिक्षा से जुड़े अनुभवों, नवाचारों तथा शिक्षकों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को पाठकों तक पहुँचाना है।

इस पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख, कहानियाँ, चित्र तथा अन्य सामग्री के सर्वाधिकार संबंधित लेखक एवं प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। टीचर्स ऑफ़ बिहार की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका के किसी भी भाग को किसी भी रूप में—जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य माध्यम से—पुनः प्रकाशित, संग्रहित या प्रसारित करना प्रतिबंधित है।

यह पत्रिका केवल पठन एवं शैक्षिक उद्देश्यों के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराई गई है। इसका किसी भी प्रकार से व्यावसायिक उपयोग या विक्रय करना वर्जित है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखक/ रचनाकार के व्यक्तिगत विचार हैं। इनके लिए पूर्णतः लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं; इन विचारों से प्रकाशक या संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

समीक्षा

भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी'
पूर्व–प्रशा अधि०
माध्य० शिक्षा परिषद् (उ० प्र०)

गत ५ अप्रैल को जब मुझे त्रैमासिक ई–पत्रिका 'प्रज्ञानिका' का यह अंक पीडीएफ के रूप में प्राप्त हुआ, तब अन्य व्यस्तताओं के बीच भी इसे तुरंत खोलकर देखने और इस पर अपने विचार लिपिबद्ध करने की तीव्र उत्कंठा जागृत हुई। सर्वप्रथम, पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ चंदन श्रीवास्तव जी एवं संपादक शुभी श्रीवास्तव जी और उनकी पूरी टीम को इस बात के लिए बधाई दी जानी चाहिए कि उन्होंने इस विशिष्ट अंक का प्रकाशन २२ मार्च को 'बिहार दिवस' के पावन अवसर पर, पटना के ऐतिहासिक गांधी मैदान में किया। यद्यपि यह मूलतः यह एक ई–पत्रिका है, लेकिन कुछ विशिष्ट व्यक्तित्वों को इसे भेंट स्वरूप प्रदान कर भौतिक रूप से इसका प्रकाशन करना, इसकी महत्ता और ज्ञान के प्रति इसके आदर को रेखांकित करता है।

एक पूर्व प्रशासनिक अधिकारी के रूप में, समाज और संस्कृति पर दस्तावेजीकरण के प्रभाव को परखना मेरा लंबा अनुभव रहा है। इस दृष्टि से देखने पर 'प्रज्ञानिका' का यह प्रयास वास्तव में अत्यंत सराहनीय और स्वागत योग्य प्रतीत होता है। इस अंक में जो वैचारिक गहराई है, वह सीधे पाठक के हृदय और बुद्धि दोनों को प्रभावित करती है। यह प्रस्तुति न केवल सूचनात्मक है, बल्कि बौद्धिक रूप से अत्यंत प्रभावशाली और अद्भुत भी है। इसमें संकलित सामग्रियां और नई जानकारियां मन को मोह लेने वाली हैं, जो ज्ञान के नए द्वार खोलती हैं। वैशाली, रोहतास, भागलपुर, पश्चिमी चंपारण, दरभंगा, मुजफ्फरपुर और नालंदा जैसे ऐतिहासिक व शैक्षणिक रूप से समृद्ध क्षेत्रों की सांस्कृतिक चेतना को समेटे हुए यह अंक अपनी सार्थकता को पूर्ण रूप से सिद्ध करता है। पत्रिका की यह बेमिसाल और शानदार प्रस्तुति पाठकों को एक उत्कृष्ट बौद्धिक पाथेय प्रदान करती है। यह संपूर्ण प्रयास न केवल ज्ञान से परिपूर्ण है बल्कि अति उत्तम है, जो भविष्य के उज्ज्वल संकेतों को दर्शाता है। संपादक शुभी श्रीवास्तव जी वास्तव के इस कुशल संपादन और विज़न की मैं भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'प्रज्ञानिका' भविष्य में भी इसी गरिमा के साथ बौद्धिक जगत में अपने नए आयाम स्थापित करेगी। इस उत्कृष्ट और प्रेरणादायी अंक के लिए मेरी सहर्ष शुभकामनाएं।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

परिकल्पना से प्रकाशन तक:

हमारे मार्गदर्शक

शिव कुमार (फाउंडर : टीचर्स ऑफ बिहार)
उ० म० वि० नारायणपुर, विक्रम, पटना

इंजि० शिवेंद्र प्रकाश सुमन (टेक्निकल लीड : टीचर्स ऑफ बिहार)
इंजीनियर, मुज़फ्फरपुर

केशव कुमार
प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू
मुरौल, मुज़फ्फरपुर

हमारे कर्णधार

पुष्पा प्रसाद (फ़ोटो कॉर्डिनेटर)
राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट, गोपालगंज

गगन कुमार (शिक्षक स्रष्टा)
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय मथुरा मंडल नगर निगम, समस्तीपुर

निवेदिता रानी (अंकुर कथाकार)
उ०म०वि०पुपरी ,कुढ़नी ,मुजफ्फरपुर

बिपिन कुमार चौधरी (शब्द शिल्पी)
प्राथमिक विद्यालय बैसागोबिंदपुर, बरारी , कटिहार

अंजली आनंद (शब्द शिल्पी)
मध्य विद्यालय सिंघाड़ी हाट, कोचाधामन, किशनगंज

अमृता चंद्रा (शब्द शिल्पी)
उत्क्रमित मध्य विद्यालय मौजीपुर , फतुहा , पटना

मुकेश कुमार शर्मा (पहेली मास्टर एवं नवोन्मेष लेखक)
उच्च माध्यमिक विद्यालय हाँसा, वारिसनगर ,समस्तीपुर

बेबी अर्चना (काव्य संयोजक एवं विविध विमर्शकार)
मध्य विद्यालय कुआड़ी , कुर्साकांटा ,अररिया

चंद्रकांत कुमार (विविध विमर्शकार)
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मोख्तियारपुर भगवानपुर बेगूसराय

आशीष अम्बर (विविध विमर्शकार)
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी ,केवटी ,दरभंगा

मृत्युंजय कुमार (समाचार संयोजक)
एन.पी.एस. खुटौना यादव टोला , पताही, पूर्वी चंपारण

रंजेश कुमार (प्रमुख सलाहकार)
प्रा० विद्यालय छुरछुरिया, फारबिसगंज, अररिया

अनुपमा प्रियदर्शिनी (तकनीकी सहयोग)
रा० उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुधहन, रघुनाथपुर, सीवान

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

हमारी टीम

हमारे संपादक मंडल

डॉ० चंदन श्रीवास्तव (प्रधान संपादक)
सहायक आचार्य (शिक्षा)
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

शुभी श्रीवास्तव (संपादक)
मध्य विद्यालय जांता पछियारी,
गायघाट, मुज़फ्फरपुर

डॉ० पूनम कुमारी (सह–संपादक)
उ० वि० सह इंटर कॉलेज
निखती कलां, रघुनाथपुर, सिवान

डॉ० विनोद कु० उपाध्याय (पाठ – शोधक)
रा० आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

नेहा कुमारी (कैलेंडर कॉर्डिनेटर)
रा. स. हरावत राज उच्च माध्यमिक विद्यालय, गणपतगंज, राघोपुर ,सुपौल

राकेश कुमार (आरोग्यम दूत) :
मध्य विद्यालय बलुआ , मनेर , पटना

राघवेंद्र कुमार झा(नीति चिंतक)
मध्य विद्यालय लखपुरा(बालक) ,बाराहाट ,बाँका

बिनोद कुमार मंडल (काव्य संयोजक एवं पर्यटन लेखक)
उ० म० वि० वाणीपुर, मनिहारी, कटिहार

मधु कुमारी (काव्य संयोजक)
प्रा०वि० बंधकट्टाबेलवारी, आजमनगर, कटिहार

दुर्गमांगे (पर्यटन लेखक)
प्राथमिक विद्यालय विठ्ठलपुर, बक्सर

सोनी वर्षा (प्रेरक प्रसंग)
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय कदवा नोखा रोहतास

ब्रजेश कुमार वर्मा (काव्य संयोजक)
राजकीय प्राथमिक विद्यालय पानापुर गोसाई टोला, मीनापुर, मुजफ्फरपुर

पुरुषोत्तम कुमार (विद्यालय सूत्रधार)
उर्दू प्राथमिक विद्यालय लोदीपुर
अंचल : गोलघर , पटना सदर , पटना

शुभम कुमार (उ० म० वि० विश्वम्भरपट्टी पश्चिमी)
(डिजाइनिंग सहायक एवं खेल विशेषज्ञ)

अनुक्रमणिका

प्रज्ञानिका

पेज संख्या

संपादक **8-9**

प्रधान संपादक की कलम से : डॉ चंदन श्रीवास्तव 8
संपादक : 1) शुभी श्रीवास्तव 9
सह- संपादक : 2) डॉ पूनम कुमारी 9

विद्यालय गाथा **10-11**

एक छोटा सा सामूहिक प्रयास : पुरुषोत्तम कुमार (विद्यालय सूत्रधार)

शिक्षक गाथा **12-13**

पठन-संस्कृति को जीवंत रखने को स्थापित की पुस्तकालय : गगन कुमार (शिक्षक स्रष्टा)

छात्र गाथा **14-15**

डर से दृढ़ता तक: नंदनी की सफलता की उड़ान : निवेदिता रानी (अंकुर कथाकार)

डिजिटल दुनियाँ **16-17**

माइक्रोसॉफ्ट कॉपिलोट , क्लाउड AI , POE AI : इं० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

आलेख **18-21**

डिग्री बड़ी या स्किल : बिपिन कुमार चौधरी (शब्द शिल्पी) 18-19
जब कक्षा 6 से 8 के बच्चे अपने भविष्य का सपना नही बता पाते : अमृता चंद्रा (शब्द शिल्पी) 20
विद्यालयों में छात्राओं को सुरक्षित माहवारी और अच्छे-बुरे स्पर्श का ज्ञान देना और जागरूक करना : अंजली आनंद (शब्द शिल्पी) 21

नवाचार **22-23**

गणित विषय के अंतर्गत 'ज्यामिति' पर नवाचार का उपयोग
मुकेश कुमार शर्मा (पहेली मास्टर एवं नवोन्मेष लेखक)

NEP: नया सवेरा **24-25**

एक नई पहल
राघवेंद्र कुमार झा (नीति चिंतक)

विविध **26-33**

पश्चिमीकरण का भारतीय संस्कृति पर कुप्रभाव 26-27
बेबी अर्चना (काव्य संयोजक एवं विविध विमर्शकार)
"संगीत, साहित्य और शिक्षा : व्यक्तित्व निर्माण के तीन आधार" 28-31
चंद्रकांत कुमार (विविध विमर्शकार)
बाल अपराध की बढ़ती प्रवृत्ति और उसका निदान 32-33
आशीष अम्बर (विविध विमर्शकार)

प्रज्ञानिका

अनुक्रमणिका

पेज संख्या

यात्रा वृत्तांत — 34-38

NILD कोलकाता (सेवा, संवेदना और पुनर्वास की एक जीवंत यात्रा) : बिनोद कुमार मंडल (काव्य संयोजक एवं पर्यटन लेखक) — 34-35
चट्टानों में बसी कला - एलोरा की गुफाएँ : दुर्गमांगे (पर्यटन लेखक) — 36-38

काव्य रंग — 39-43

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु :बिनोद कुमार मंडल (काव्य संयोजक एवं पर्यटन लेखक) — 39
कर्म : बेबी अर्चना (काव्य संयोजक) — 40
मंदिर जैसा एक विद्यालय पाऊं : मधु कुमारी (काव्य संयोजक) — 41
समर कैम्प : ब्रजेश कुमार वर्मा (काव्य संयोजक) — 42-43

योग एवं साधना — 44

साधना : राकेश कुमार (आरोग्यम दूत)

खेल जगत — 45

क्रिकेट की दुनिया से परिचय : शुभम कुमार (खेल विशेषज्ञ)

प्रेरक प्रसंग — 46-47

समय का मोल : सोनी वर्षा (प्रेरक प्रसंग)

ज्ञान की पोटली — 48-51

रोचक तथ्य — 48
दिमागी कसरत — 49
Word of the edition, Thought for morning assembly — 50
हैक्स व ट्रिक्स : मुकेश कुमार शर्मा (पहेली मास्टर एवं नवोन्मेष लेखक) — 51

आगामी कैलेंडर — 52-53

नेहा कुमारी (कैलेंडर कॉर्डिनेटर)

सुर्खियाँ — 54-55

मृत्युंजय कुमार (समाचार संयोजक)

चित्र वीथिका — 56-57

पुष्पा प्रसाद (फ़ोटो कॉर्डिनेटर)

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि समाज के वर्तमान और भविष्य के निर्माण की आधारशिला है। शिक्षक अपनी सृजनशीलता, समर्पण और नवाचार के माध्यम से शिक्षा को जीवंत बनाते हैं। इसी भावना को केंद्र में रखकर "प्रज्ञानिका" का यह अंक प्रस्तुत किया जा रहा है, जो बिहार के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयों में हो रहे प्रेरक प्रयासों की रचनात्मक प्रस्तुति है।

इस अंक में शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियाँ, विद्यार्थियों की प्रेरक उपलब्धियाँ, विद्यालयों में हो रहे सकारात्मक परिवर्तन तथा शिक्षा के क्षेत्र में नई तकनीकों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभाव को विभिन्न गाथा-खण्डों में समाहित किया गया है। यह केवल लेखों का संकलन नहीं, बल्कि उस सतत प्रयास का प्रतिबिंब है जिसके माध्यम से बिहार के विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों से उत्कृष्ट शिक्षण वातावरण का निर्माण हो रहा है।

सधन्यवाद।

प्रधान संपादक

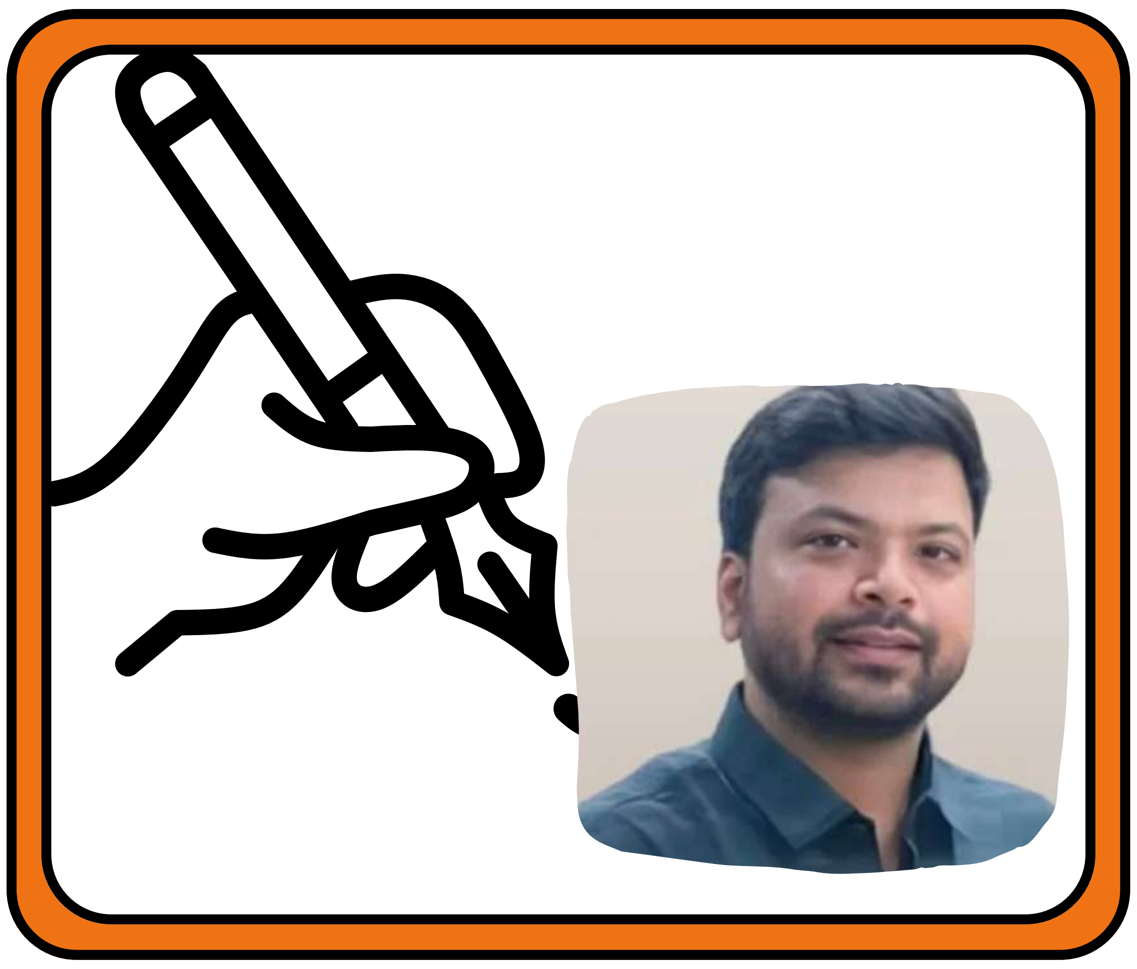

डॉ० चंदन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिंदू विश्वविद्यालय,
वाराणसी
एवं शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

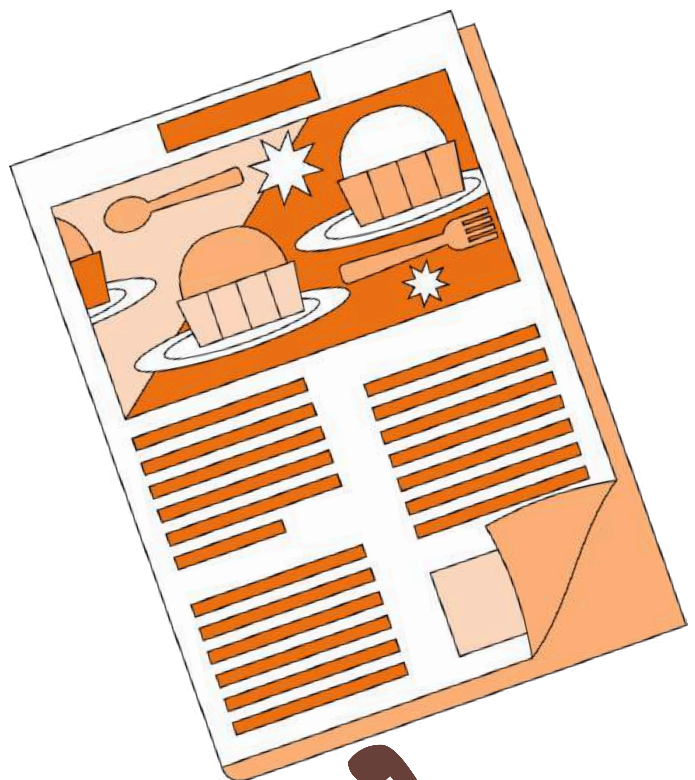

प्रधान संपादक की कलम से

संपादक मंडल

'प्रज्ञानिका' का यह नवीन अंक शिक्षा की उसी शाश्वत यात्रा को समर्पित है जो मनुष्य को अज्ञान के तिमिर से निकालकर ज्ञान के आलोक की ओर ले जाती है। इस अंक के माध्यम से हमारा यह विनम्र प्रयास रहा है कि हम आधुनिक युग की शैक्षणिक चुनौतियों और नवाचारों को आपके समक्ष लेकर आएं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि वास्तविक शिक्षा वही है जो हमारे भीतर जिज्ञासा की लौ को प्रज्वलित रखे और हमें एक संवेदनशील व जागरूक नागरिक बनाए। आशा है कि ज्ञान और चिंतन के इस धरातल पर बुना गया यह अंक आपकी बौद्धिक चेतना को झंकृत करने में सफल सिद्ध होगा। आपके बहुमूल्य विचार और प्रतिक्रियाएं ही हमारी इस वैचारिक यात्रा की असली धरोहर हैं, अतः अपने सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं।

संपादक
शुभी श्रीवास्तव
रा० म० वि० जांता पछियारी ,
गायघाट, मुजफ्फरपुर

सह –संपादक
डॉ० पूनम कुमारी
उ० वि० सह इंटर कॉलेज
निखती कलां,
रघुनाथपुर, सिवान

प्रिया पाठकों,
हमारी ऊर्जावान और अनुभवी टीम के साझा प्रयासों से तैयार प्रज्ञानिका का नया अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। प्रज्ञानिका की यह यात्रा बिहार के समर्पित शिक्षकों के सामूहिक रचनात्मकता का अनुपम उदाहरण है। इसमें शिक्षा, कला और तकनीकी नवाचारों का ऐसा अनूठा संगम है जो विद्यालय परिवेश को नई ऊर्जा प्रदान करेगा। आशा है हमारी टीम की इस वैचारिक और कलात्मक प्रस्तुति आपके ज्ञान और दृष्टिकोण को समृद्ध करेगी।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

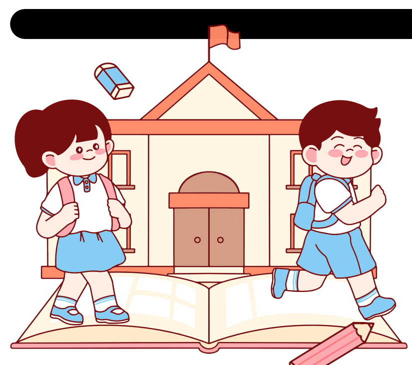

एक छोटा-सा सामूहिक प्रयास

-पुरुषोत्तम कुमार

पिछले वर्ष जब बीपीएससी के द्वारा प्रधान शिक्षक के रूप में मेरा चयन हुआ तो मैं खुशी से फूले नहीं समा रहा था। एक तो ओहदा वाला पद ऊपर से पटना नगर निगम के विद्यालय में कार्य करने का अवसर। मेरे साथ मेरे परिवार में भी उत्सव का माहौल था।

लेकिन प्रथम दिन विद्यालय में योगदान देते ही मेरा सारा उत्साह ठंडा पड़ गया।मुझे विद्यालय तो मिला था मगर एक कमरे का। विद्यालय में बच्चे थे, मगर विद्यालय के बच्चों की तरह नहीं। ऐसा लग रहा था वे विद्यालय आ कर यहां के शिक्षकों के ऊपर उपकार कर रहे हों। मुझे लगा मै कहां आ गया? कहां बच्चों से भरा हुआ एक एक वर्ग कक्ष और कहां एक कक्ष में समाहित पूरा विद्यालय। मैं सोचने लगा क्या इसलिए मैंने इतनी मेहनत की थी। खैर अब कुछ नहीं हो सकता था। मुझे इस नई चुनौती को स्वीकार करना ही था। वैसे तो विद्यालय में अनेक समस्याएं ही थीं, पर उन सभी का त्वरित समाधान संभव नहीं था। मैने अपने शिक्षकों के साथ मिलकर एक निर्णय लिया कि हर महीने कुछ न कुछ अच्छा करने का प्रयास करना है। उनकी सहमति से मुझमें एक नवीन ऊर्जा का संचार हुआ। विद्यालय के 95% बच्चे विद्यालय के गणवेश में नहीं आ रहे थे। कारण पृच्छा पे उनके द्वारा बताया गया कि उनके पास आधार नहीं है, इसलिए विद्यालय के ई-शिक्षा कोश पे उनका नाम नहीं है , और इस कारण उन्हें सरकार के तरफ से मिलने वाली छात्रवृति या पोशाक की राशि नहीं मिल पाती है। कुछ बच्चे जिन्हें राशि मिली भी और उनके पास ड्रेस भी था, पर वे भी इन बच्चों की देख- देखी ड्रेस में नहीं आते थे।

बहुत समझाने के बाद वे तो ड्रेस में आने लगे, पर इन बच्चों की समस्या अभी हल नहीं हुई थी। शिक्षा समिति की बैठक और अभिभावक शिक्षक गोष्ठी में मैने अभिभावकों से वार्तालाप कर इस समस्या का हल निकालने का बहु प्रयास किया लेकिन अभिभावकों के तरफ कोई सकारात्मक पहल नहीं की गई।

इसके पीछे कारण भी है। अधिकांशतः माता पिता मेहनत मजदूरी कर के परिवार का जीविका निर्वाह कर रहे हैं।वे सुबह से शाम तक घर से बाहर रहते हैं, इस कारण वे अपने बच्चों के लिए समय नहीं निकाल पाते। इसी कारण अधिकांशतः बच्चों का आधार नहीं बन पाया। भले ही इन्होंने अपने बच्चों को आधार नहीं बनवाया हो ,परंतु अपने बच्चों को पॉकेट मनी जरूर देते हैं। बच्चे उस पॉकेट मनी से ऐसी चीजें खरीदते जो उनके स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं होता। मैंने एक दिन चेतना सत्र में उन बच्चों को बोला कि तुम लोग प्रतिदिन जितने पैसों का खाने पीने का सामान खरीदते हो, वो पैसा यदि बचाते तो तुम्हारा ड्रेस आ सकता था। एक बच्चे ने बड़े मासूमियत से मुझसे पूछा कि क्या रोज़ 5-10 रूपए बचा कर ड्रेस खरीदा जा सकता है। मैंने ऐसे ही बोल दिया हां। अगले दिन चार पांच की संख्या में ये बच्चे अपने साथ 5-10 रुपए ले कर आए और बोल कि इसको ड्रेस के लिए जमा कर लिजिए। हम लोग रोज़ कुछ न कुछ जमा करेंगे हम लोग का ड्रेस बनवा दीजिएगा। मेरी आंखों से आंसु निकल गए। मैंने उनको गले लगा कर बोला कि अब तुमलोग का ड्रेस जरूर खरीदेंगे। इस सम्बन्ध में मैंने अपने शिक्षकों से भी बात की। उन्होंने कहा कि इन बच्चों के ड्रेस में कुछ पैसा वे लोग भी देंगे। अब मै अकेला नहीं हूं, मेरे साथ मेरे शिक्षक साथियों का साथ है और साथ है मासूमों की असीम ऊर्जा। अब बच्चों ने एक तरह से चिल्ड्रेन बैंक बना लिया है, और मुझे उसका मैनेजर। वे मुझसे प्रतिदिन हिसाब पूछते है, मै उनको कहता हूं तुम बस अपना काम करते रहो। तुम्हारा कम हो जाएगा। मैं जानता हूं ये कार्य इतना आसान नहीं है, लेकिन मैं बच्चों के उमंग और उत्साह को ठंडा नहीं पड़ने देना चाहता। इन बच्चों में बचत के प्रति जो भाव और रुचि पैदा हुई है, ये इनके जीवन में एक नया सवेरा ला सकता है।

हम सभी शिक्षकों ने ये निर्णय लिया है कि किसी कीमत पे 15 अगस्त को ये बच्चे अपने पॉकेट मनी से बचाए पैसे से बना विद्यालय गणवेश जरूर पहन के आएंगे। हम सब उस सुबह का इंतजार कर रहे हैं, जब इन बच्चों का मासूम चेहरा ये कह रहा होगा कि हमारा विद्यालय भी बदल रहा है। हम भी किसी से कम नहीं।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

शिक्षक गाथा

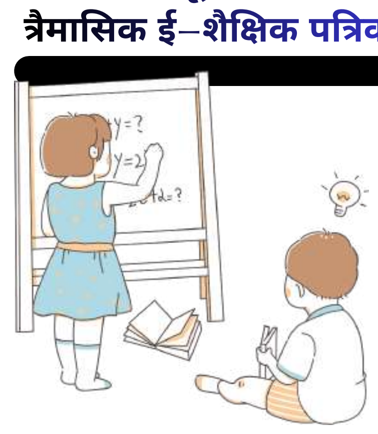

पठन-संस्कृति को जीवंत रखने को स्थापित किया पुस्तकालय

-गगन कुमार

-) अपने घर के एक कमरे को वर्ष 2007 में बनाया पुस्तकालय

-) किताबों के अलावा अखबारों के संपादकीय पृष्ठों का है संग्रह

-) चिह्नित म० वि० गंगापुर में प्रधानाध्यापक हैं अखिलेश ठाकुर

'प्रज्ञानिका' के शिक्षक गाथा स्तम्भ में प्रस्तुत है एक ऐसे शिक्षक की गाथा जो यह साबित कर रहे हैं कि शिक्षक पीढ़ियों को संवारने का कार्य करते हैं। साथ ही शिक्षक का यह भी कार्य होता है कि समाज के लिए भविष्य में आनेवाली चुनौतियों के लिए वे समाधान ढूंढ़ने का प्रयास करें। इस हेतु वे मात्र विद्यालयी समय तालिका या विद्यालयी परिसर पर ही निर्भर नहीं रहते हैं, बल्कि उनके लिए हर वह स्थान, हर वह समय, जो सीखने-सिखाने के लिए उपयोगी हो सकता है, विद्यालय का वर्गकक्ष बन जाता है।

यहां बात हो रही है समस्तीपुर जिले के सरायरंजन प्रखंड अंतर्गत चिह्नित मध्य विद्यालय गंगापुर में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत अखिलेश ठाकुर की, जो समाजोपयोगी नवाचारी व अनुकरणीय कार्यों में पिछले कई वर्षों से लगातार जुटे हुए हैं। प्रस्तुत है प्रधानाध्यापक श्री ठाकुर के कुछ अनुकरणीय कार्य -तीन सौ किताबों से घर में आरंभ किया पुस्तकालय ।

एआई के इस युग में जहां लोग डिजिटल उपकरणों पर ज्यादा निर्भर रहने लगे हैं, 'माउस क्लिक' व 'टच स्क्रीन' पर सरलता से सामग्री उपलब्ध हो रही है, वहीं डिजिटल उपलब्धता की इस बहुलता से कई वर्ष पूर्व श्री ठाकुर ने अपने पिता स्मृतिशेष शिक्षक जगदीश ठाकुर की प्रेरणा व समाज में पुस्तक-पठन संस्कृति को जीवंत रखने के उद्देश्य के साथ वर्ष 2007 में ही एक पुस्तकालय की स्थापना की। इस हेतु उन्होंने समस्तीपुर शहर के मुसापुर स्थित अपने घर के एक कमरे को पुस्तकालय का आकार दिया और मात्र तीन सौ किताबों के साथ 'जगदीश स्मृति पुस्तकालय' नाम से आरंभ किया। वर्तमान समय में इस पुस्तकालय में तीन हजार से अधिक किताबें, प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाएं व प्रमुख अखबारों के सम्पादकीय पृष्ठों का अच्छा संग्रह उपलब्ध है। यह छात्र-छात्राओं, शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ-साथ शोधार्थियों के लिए भी काफी उपयोगी साबित हो रहा है। साथ ही इस पुस्तकालय के सौजन्य से शैक्षणिक व साहित्यिक, महापुरूषों की जयंती व पुण्यतिथि जैसे कार्यक्रम भी समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं।

बच्चों को जन्मदिन पर भेंट करते हैं पत्रिका

श्री ठाकुर अपने पदस्थापित चिह्नित मध्य विद्यालय गंगापुर में बच्चों को उनके जन्मदिन पर उपहार में पत्रिका भेंट करते हैं। यह सिलसिला पिछले कई वर्षों से अनवरत् जारी है। प्रधानाध्यापक अखिलेश ठाकुर बताते हैं कि बच्चों को किताबों से जुड़ाव बना रहे। इस हेतु विद्यालय की पत्रिका 'नवसृजन' स्कूल के बच्चों को उनके जन्मदिन पर भेंट करते हैं।

'सेवांजलि' : सेवानिवृत्त शिक्षकों का जीवनवृत्त

साहित्यिक अभिरूचि के धनी अखिलेश ठाकुर सेवानिवृत्त शिक्षकों की विभागीय सेवाकालीन जीवन को 'सेवांजलि' नामक पत्रिका में शब्दचित्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। साधनसेवी की भूमिका का निर्वहन करते हुए श्री ठाकुर ने महसूस किया था कि प्रेरणा के अभाव में लोग अपनी क्षमता का बेहतर प्रदर्शन करने से चूक जाते हैं। इस हेतु उन्होंने 'सेवांजलि' नामक पत्रिका का प्रकाशन नवोदित कर्मठ शिक्षकों को पूर्व के अनुभवी शिक्षकों की कहानी के माध्यम से प्रेरित करने के उद्देश्य के साथ वर्ष 2009 में आरंभ किया, जो अनवरत् जारी है।

विद्यालय से प्रकाशित करते हैं 'नवसृजन' पत्रिका

बच्चों की सृजनात्मक क्षमता को निखारने व उनकी चिंतन क्षमता को परिमार्जित करने के उद्देश्य के साथ चिह्नित मध्य विद्यालय गंगापुर से प्रधानाध्यापक अखिलेश ठाकुर ने 'नवसृजन' पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 2022 से आरंभ किया। इस पत्रिका में बच्चों के साथ–साथ शिक्षक–शिक्षिकाओं की रचनाओं को भी शामिल करते हैं।

वर्ष 2022 में मिला राजकीय शिक्षक सम्मान

शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रधानाध्यापक अखिलेश ठाकुर को वर्ष 2022 में 'राजकीय शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया। क्वेस्ट अलाईस संस्था व बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा इन्हें 'ज्ञानदा शिक्षा रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें विभिन्न मंचों से दर्जनाधिक सम्मान प्राप्त हुआ है।

छात्र गाथा
खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

डर से दृढ़ता तक: नंदनी की सफलता की उड़ान

-निवेदिता रानी

नंदनी कुमारी
(कक्षा 9)

परिचय: सपनों की नींव

=> विद्यालय: माधव उच्च माध्यमिक +2 विद्यालय, मांझागढ़ (गोपालगंज)

=> पारिवारिक पृष्ठभूमि: — एक मध्यवर्गीय परिवार, जहाँ पाँच बहनों की पढ़ाई और भविष्य की बड़ी आर्थिक जिम्मेदारियाँ हैं।

प्रेरणा का पहला कदम: जब डर भरोसे में बदला

कक्षा 8 (उत्क्रमित मध्य विद्यालय, भटवालिया) में पढ़ाई के दौरान एक टर्निंग पॉइंट आया जब विद्यालय में शिक्षकों द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति परीक्षा NMMSS के बारे में बताया गया।

=> चुनौती: आत्मविश्वास की कमी। पढ़ाई में खुद को कमजोर समझना और परीक्षा का कोई अनुभव न होना

=>समाधान:

माता–पिता और शिक्षकों का अटूट विश्वास और डाँट के बजाय प्यार से समझाना नंदनी के भीतर सोए आत्मविश्वास को जगाया।

तैयारी का सफर: सही मार्गदर्शन और तकनीक

सफलता कभी भी अकेले नहीं मिलती, उसके लिए सही इकोसिस्टम की जरूरत होती है। नंदनी की तैयारी को इन तीन स्तंभों ने मजबूत बनाया:—

=> शिक्षक का सान्निध्य:— स्कूल में कठिन विषयों को आसान और सरल तरीके से समझाना।

=> डिजिटल सपोर्ट:— 'Teacher of Bihar' प्लेटफॉर्म और 'Exam Cell' द्वारा उपलब्ध कराई गई सटीक अध्ययन सामग्री और प्रश्न बैंक से अध्ययन।

=> सेल्फ स्टडी (स्वअध्ययन):— स्कूल के बाद घर पर नियमित अभ्यास और सही रणनीति।

"मुश्किलें दिल के इरादे आज़माती हैं,
स्वप्न के परदे निगाहों से हटाती हैं।
हौसला मत हार गिरकर ओ मुसाफिर,
ठोकरें ही इंसान को चलना सिखाती हैं।"

* परीक्षा का दिन: घबराहट से जीत तक

परीक्षा केन्द्र पर डर और घबराहट होना स्वाभाविक था, लेकिन यहाँ भी उनके शिक्षक और माता–पिता ढाल बनकर खड़े थे। उनके प्रोत्साहन और हिम्मत भरे शब्दों ने नंदनी के डर को छू–मंतर कर दिया। नंदनी पूरे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा कक्ष में गई और परिणाम? एक शानदार सफलता!

* सफलता का प्रतिफल: NSP और आर्थिक राहत:—

परीक्षा पास करने के बाद आगे की राह फिर शिक्षकों ने दिखाया। उन्होंने नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल (NSP) पर पंजीकरण कराया, जिसके तहत नंदनी को 12,000/– की छात्रवृत्ति राशि प्राप्त होगी।

* छात्रवृत्ति का महत्व:— पाँच बहनों वाले परिवार के लिए यह राशि एक संबल बनी।

* उपयोग:—अब नंदनी बिना किसी आर्थिक संकोच के अपनी किताबें, कॉपियाँ और पढ़ाई की अन्य जरूरतें खुद पूरी कर सकती है।

* जीवन का नया नजरिया (अंतिम निष्कर्ष)

इस छात्रवृत्ति ने सिर्फ नंदनी की जेब को नहीं, बल्कि उनके हौसले को भी मजबूत किया है। अब उनके अंदर से हर चुनौती का सामना करने का डर खत्म हो चुका है।

* अन्य छात्रों के लिए संदेश:—"अगर आपके पास सही मार्गदर्शन करने वाले शिक्षक हों, और Teacher of Bihar व Exam Cell जैसा बेहतरीन प्लेटफार्म हो तो कोई भी कमजोरी आपकी सफलता की राह में रोड़ा नहीं बन सकती।"

शुभकामना संदेश:—

नंदनी की यह सफलता अन्य विद्यार्थियों को दृढ़ता से भविष्य में ऊँचे मुकामों पर पहुँचाने के लिए प्रेरणा स्त्रोत है! हम नंदनी के उज्जवल भविष्य की शुभकामना के साथ पढ़ते रहने और आगे बढ़ते रहने की कामना करते हैं।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

डिजिटल दुनियाँ

Microsoft Copilot

-इंजि० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

COPILOT

Microsoft Copilot एक AI आधारित सहायक है जिसे Microsoft द्वारा विकसित किया गया है। यह AI उपयोगकर्त्ताओं को सवालों के जवाब देने, लेख लिखने, सारांश बनाने, कोड लिखने और जानकारी खोजने में मदद करता है। यह विशेष रूप से शिक्षकों, छात्रों, शोधकर्त्ताओं और कंटेंट क्रिएटर्स के लिए बहुत उपयोगी है।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ प्राकृतिक भाषा में सवाल पूछने और जवाब पाने की सुविधा।

✅ लेख, नोट्स, ई-मेल और असाइनमेंट तैयार करने में मदद।

✅ इंटरनेट से ताज़ा जानकारी खोजने की क्षमता।

✅ कोडिंग और तकनीकी प्रश्नों में सहायता।

✅ चित्र (Images) बनाने की सुविधा।

✅ 24×7 मोबाइल, कंप्यूटर या टैबलेट पर उपलब्ध।

Microsoft Copilot का उपयोग कैसे करें?

1️⃣ वेबसाइट पर जाएँ – https://copilot.microsoft.com की आधिकारिक वेबसाइट खोलें।

2️⃣ नि:शुल्क पंजीकरण करें – ईमेल से अकाउंट बनाएँ।

3️⃣ अपना प्रश्न लिखें – अपनी रुचि और विषय के अनुसार।

4️⃣ शिक्षक अपने छात्रों को असाइनमेंट दे सकते हैं और पढ़ाने या सीखने से जुड़ी तस्वीरें भी बना सकते हैं।

शिक्षक या छात्र अपनी तथा अपने विद्यालय की तस्वीरों का उपयोग करके आकर्षक शैक्षणिक चित्र बना सकते हैं। इसके लिए नीचे दिए गए प्रॉम्प्ट को कॉपी-पेस्ट करें और अपनी फोटो अपलोड करें। AI की मदद से आप अपने सरकारी विद्यालय के सीखने-सिखाने के माहौल को दर्शाती सुंदर और प्रेरणादायक तस्वीर तैयार कर सकते हैं।

Create a realistic image of an Indian government school classroom where a teacher is teaching students. Use the teacher's photo and students' photos to show them studying together in a positive learning environment, blackboard, books, and bright classroom, inspiring government school education.

Microsoft Copilot ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म: https://copilot.microsoft.com

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

Claude AI

Claude

Claude AI एक आधुनिक AI चैटबॉट है जिसे Anthropic कंपनी ने बनाया है। यह विशेष रूप से लंबे लेख पढ़ने, सारांश बनाने, शोध करने और लेखन कार्यों में बहुत उपयोगी है। शिक्षक और छात्र इसे पढ़ाई और शोध के लिए आसानी से उपयोग कर सकते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ लंबे लेख या PDF का सारांश बनाने की क्षमता।

✅ नोट्स, लेख और असाइनमेंट लिखने में मदद।

✅ जटिल विषयों को सरल भाषा में समझाने की क्षमता।

✅ शोध कार्य और प्रोजेक्ट बनाने में सहायता।

✅ सुरक्षित और जिम्मेदार AI डिजाइन।

✅ मुफ्त उपयोग की सुविधा।

Claude AI का उपयोग कैसे करें?

1️⃣ वेबसाइट पर जाएं – https://claude.ai की आधिकारिक वेबसाइट खोलें।

2️⃣ नि:शुल्क पंजीकरण करें – ईमेल से अकाउंट बनाएँ।

3️⃣ अपना प्रश्न लिखें – अपनी रुचि और विषय के अनुसार।

उदाहरण:

• “Photosynthesis को आसान भाषा में समझाओ”

• “Class 10 के लिए इतिहास के नोट्स बनाओ”

Claude AI ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://claude.ai

आलेख

डिग्री बड़ी या स्किल

-विपिन वियान हिंदुस्तानी

यह वर्तमान परिदृश्य में हजारों युवाओं के लिए एक अजीब त्रासदी है कि जीवन की आधी उम्र डिग्रियों के बंडल जमा करने के बावजूद, अंत में उसे जॉब नाम के गॉड की अन्तहीन तलाश होती है लेकिन दुर्भाग्य से 90% शिक्षित युवा आपको अंत में यही कहते मिलेंगे कि मैं बनना तो कुछ और चाहता था लेकिन बन कुछ और गया। मतलब कॉलेज लाइफ के अधिकांश हीरो असल जीवन में जीरो साबित हो रहे हैं।

> हमें तो हुनर ने लूटा, डिग्रियों में कहां दम था, जॉब हमें वहां भी नहीं मिली, जहां वेकेन्सी ज्यादा कैंडिडेट कम था।

इंसान जब खुद ही खुद के नजरों में गिर जाए तो उसकी कुंठा की पराकाष्ठा अंदर ही अंदर दीमक की भांति उसे पल–पल नष्ट करती रहती है। फिर आप ऐसे युवा से रचनात्मकता और उत्पादकता की वह उम्मीद नहीं कर सकते हैं, जिसकी नैसर्गिक क्षमता प्रकृति ने उसे वरदान स्वरूप प्रदान किया है। फिर सवाल उठता है कि इस समस्या की जड़ क्या है ? 5000 वेकेंसीज के लिए पंद्रह लाख लोग आवेदन क्यों डाल रहे हैं ?

जॉब नहीं मिलने पर क्या शेष 1495000 लोगों के लिए जीवन के मायने बदल जाते हैं ? क्या जिस उम्र में अपने ऊर्जा के शत प्रतिशत उपयोग से परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति में कठिन परिश्रम किया जाना चाहिए, उस उम्र में सीमित अवसरों को लपकने के लिए स्पर्धा की इंतहा तक खुद को तैयार करने वाली युवा पीढ़ी निराशा और अवसाद के पहाड़ों के नीचे दबकर अदृश्य रूप से सिसकने के लिए मजबूर होना ही उसकी नियति है अथवा लोकतांत्रिक पद्धति से खुद के योगदान के फलस्वरूप गठित सरकार के विरुद्ध सड़कों पर मोर्चा खोल देना उनकी मजबूरी। क्या वाकई भारत जैसे विशाल आबादी वाले राष्ट्र में सभी युवाओं को उनके मनपसंद नौकरी का अवसर उपलब्ध करवाना, किसी सरकार के लिए संभव है अथवा बेरोजगार युवाओं की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पाना एक लोकतांत्रिक सरकार के लिए व्यवहारिक मजबूरी है ? क्या सरकारी नौकरी ही शिक्षित युवाओं के लिए जीवन में सफलता की गारंटी है अथवा माइंडसेट बदलकर सरकारी नौकरी के मानसिक गुलामी से मुक्त होकर जीवन में सफलता का श्रेष्ठ मुकाम हासिल किया जा सकता है? क्या सरकारी नौकरी के ग्लैमर से आजाद होना इतना आसान है ? क्या परिवार वाले और माता पिता की अपेक्षाओं के बोझ को उतारकर जीवन के कठिन डगर पर खुद को स्थापित करना वाकई संभव है ? क्या व्यापार, उद्यमिता, कौशल और कुशलता से समाज में अपनी उपयोगिता सिद्ध कर, खुद के खास होने का एहसास, सरकारी नौकरी के टाइम टेबल वाली गुलामी से ज्यादा संतुष्टि दे सकती है ?

ऐसे सैकड़ों सवाल का जवाब खोजना और समाज की वर्तमान पीढ़ी के हौंसला अफजाई के साथ–साथ जीवन और करियर के प्रति युवाओं के नजरिए को बदलना वर्तमान समय में नितांत आवश्यक हो गया है अन्यथा व्यवस्था के प्रति आक्रोश को हवा देकर चंद हुनरमंद लोग राजनीति की रोटी सेकने में कामयाब हो जायेंगे। फिर GEN Z का भौकाल तबाही का कोई भयानक तूफान ला सकता है अथवा कोकरोच पार्टी मुंगेरी लाल के हसीन सपने दिखाकर सत्ता परिवर्तन का दंभ भर सकता है। ऐसे में हालात की विषमता और जीवन के अंतहीन उलझनों में उलझी युवा पीढ़ी, ठीक उसी प्रकार दिग्भ्रमित हो सकती है, जैसे एक छोटा बच्चा मामूली चॉकलेट के लालच में अपहरण का शिकार हो जाता है और जबतक उसे अपनी नादानी समझ आती है, वह अपना और अपने परिवार की लुटिया डूबा चुका होता है। जल के तेज प्रवाह को रास्ता दिखाना, अमावस्या की रात में चांद के तलाश के समान दुर्गम और कठिन है क्योंकि जल का तेज प्रवाह अपने प्रवाह का मार्ग स्वयं सुनिश्चित करता है लेकिन असल समस्या तो उनके प्रवाह के मार्ग में सुनियोजित तरीके से खड़ी की गई बाँध होती है। आज की युवा पीढ़ी इसी कृत्रिम बांध के मकड़जाल में उलझने के कारण कुछ ज्यादा व्याकुल और व्यथित है। उनके जीवन की प्राथमिकताएं उनकी क्षमता या रूचि के आधार पर निर्धारित नहीं होता है, बल्कि यह ऐसे लोगों द्वारा निर्धारित किया जाता है जो खुद उस पथ से अबोध और अनजान होते हैं। यही कारण है कि नीट और प्री मेडिकल परीक्षा में असफल युवा आपको वकालत की डिग्री हासिल करने की इच्छा में व्याकुल लाइन में दिख जाएंगे। इंजीनियरिंग की दुनियां में असफल युवा B.ED प्रवेश परीक्षा की भीड़ में दिख जायेंगे। आर्ट्स का छात्र मेडिकल स्टोर पर इंजेक्शन लगाता मिल जाएगा। प्रतियोगी परीक्षा में असफल युवा, सोशल मीडिया में स्वघोषित लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की जिम्मेदारी के निर्वहन में मशगूल दिख जायेगा। आखिर में पेट की आग और क्षुधा की ज्वाला से कुंठित युवा पीढ़ी एक ऐसी जिंदगी गुज़ारने को मजबूर है, जिसकी इच्छा उसे थी ही नहीं।

मगर सबसे बड़ा सवाल यह है कि रोजी–रोटी के जुगाड़ की बेचैनी में अनमने ढंग से युवाओं के द्वारा किया गया चयन समाज और राष्ट्रहित में कितना उचित है ? क्या अधूरी लालसाएं अथवा संतुष्टि के अभाव के कारण ही आज की पीढ़ी शॉर्ट कट और गैर कानूनी मार्ग को अपना रहे हैं और कुछ परिस्थितियों में ग़म भुलाने के लिए जाम और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन को विवश हो रहे हैं। दूसरे शब्दों में दिग्भ्रमित अथवा कुंठित युवा गलत लोगों से प्रभावित होकर, हर उस गलत मार्ग का अनुकरण के लिए बाध्य हैं, जिसका अंजाम अपराध की दुनियां के संगीन दरवाजे तक दस्तक देता है। अगर आप इन बातों से इत्तेफाक रखते हैं तो आपके दिल से भी यह आवाज जरूर आयेगी "डिग्री बड़ा या स्किल"। यह वाकई वर्तमान परिदृश्य में एक गंभीर और चिंतनीय सवाल है कि युवा मन को डिग्री के ऐसी भट्ठी में क्यों धकेल दिया जाए, जहां वह तपकर कोयला से कुंदन बनने की जगह, हुनर के अभाव में बेरोजगारी के कालिख से खुद को सना महसूस करे।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

जब कक्षा 6 से 8 के बच्चे अपने भविष्य का सपना नही बता पाते

-अमृता चंद्रा

हमारे सरकारी विद्यालयों के बच्चे जो कक्षा 7वी या 8वी में पढ़ते है,उनसे यदि पूछा जाए की "बड़े हो कर आप क्या बनना चाहते है"तो वो चुप हो जाते है। उनके पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नही होता है या फिर ऐसा लगता है कि वे कभी करियर के बारे मे सोचे हीं नहीं। खासकर लड़कियों में यह अभाव ज्यादा देखने को मिलती है। जब कि वे वही बच्चे होते है जो तीसरे चौथे पांचवे कक्षा में इसी सवाल का जबाब उछल–उछल कर देते है। कोई डॉक्टर कोई टीचर कोई पुलिस बोलता है । पर जब यही बच्चे सातवीं आठवीं में जाते है तो न जाने क्यो निरुत्तर हो जाते है। क्या यह सिर्फ बच्चों की कमी है? या आस–पास के उपलब्ध परिवेश या मार्गदर्शन की कमी। ऐसा नही है कि बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर पुलिस, पत्रकार, टीचर जैसे पेशे को नहीं जानते। कम्प्यूटर, खेल, बिजनेस हर चीज की थोड़ी बहुत जानकारी रखते है। पर शायद उन्हें यह नही पता कि उन्हें करियर से कैसे जोड़े? करियर संबंधी जानकारी और प्रेरणा के अभाव में वो अपने सपनों को पहचान नही दे पाते। इसके अलावा परिवार की आर्थिक स्थिति, सीमित संसाधन की वजह से बच्चे अपना लक्ष्य स्पष्ट नहीं कर पाते। ऐसा भी हो सकता है कि बच्चा पहली पीढ़ी का शिक्षार्थी हो और परिवार की तरफ से मार्गदर्शन के अभाव में वह लक्ष्य स्पष्ट न कर पा रहा हो। ऐसे कई कारण हो सकते है। ऐसे में विद्यालय की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

हम शिक्षकों को चाहिए कि समय–समय पर बच्चों से हम बच्चों के सपने के बारे में बात करे और अगर बच्चे सपने नही देख पा रहे तो उन्हें सपने देखना भी सिखाये। आभावों में रहकर सफलता पाने वाले लोगो के बारे में बताये उनकी कहानियां सुनाए ताकि बच्चों को प्रेरणा मिल सके और उनका आत्मविस्वास बढ़े । विद्यालयों में करियर संबंधी जागरूकता कार्यक्रम, प्रेरणादायक गतिविधियां, आयोजित की जाए ताकि वे अपने पसंद के क्षेत्र का चुनाव कर सके।

हर बच्चे में कोई न कोई प्रतिभा होती है, आवश्यकता है केवल उन्हें पहचानने की और सही मार्गदर्शन देने की । उचित मार्गदर्शन और प्रेरणा मिले तो हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चे ऊंची भी उड़ान भर सकते है।

अतः बच्चो से केवल प्रश्न पूछना ही पर्याप्त नही की वे *बड़े हो कर क्या बनोगे*। इन्हें ऐसा वातावरण देना जिसमे वे सपने देख सके।उनको सही जानकारी और प्रेरणा देना होगा जिससे उनका आत्मविस्वास बढ़े। ऐसा वातावरण जहाँ वे अपने सपनो को पहचान सके और उसे मूर्त रूप दे सके। मेरे लिए यही सही और सच्चे अर्थों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा होगी।

विद्यालयों में छात्राओं को सुरक्षित माहवारी और अच्छे-बुरे स्पर्श का ज्ञान देना और जागरूक करना

-अंजली आनंद

आज के समय में शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों की समझ भी उतनी ही आवश्यक हो गयी है। विशेष रूप से छात्राओं के लिए माहवारी और अच्छे–बुरे स्पर्श का ज्ञान बेहद जरूरी है। यह ज्ञान उन्हें न केवल शारीरिक रूप से सशक्त बनाता है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी सुरक्षित करता है।

शिक्षक छात्राओं से माहवारी के विषय में बात करें कि यह एक प्राकृतिक और सामान्य प्रक्रिया है, जो हर लड़की के जीवन का हिस्सा होती है। फिर भी, समाज में इसके प्रति कई भ्रांतियाँ और संकोच मौजूद हैं। विद्यालयों में यदि छात्राओं को सही और वैज्ञानिक जानकारी दी जाए— जैसे स्वच्छता का ध्यान रखना, सैनेटरी पैड या अन्य सुरक्षित विकल्पों का उपयोग , स्वास्थ्य संबंधी सावधानियाँ—तो वे बिना डर और शर्म के इस प्रक्रिया को समझ सकती हैं। इससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और वे अपनी सेहत का बेहतर ख्याल रख पाती हैं। इसके साथ ही, अच्छे और बुरे स्पर्श का ज्ञान भी अत्यंत आवश्यक है। बच्चों को यह समझाना जरूरी है कि कौन सा स्पर्श सुरक्षित और स्नेहपूर्ण है, और कौन–सा असुरक्षित या अनुचित। विद्यालयों में इस विषय पर खुलकर और संवेदनशील तरीके से चर्चा होनी चाहिए, ताकि छात्राएं किसी भी गलत स्थिति को पहचान सकें और तुरंत प्रतिक्रिया दे सकें। उन्हें यह भी सिखाया जाना चाहिए कि यदि कोई असहज स्थिति उत्पन्न हो, तो वे बिना डर के अपने माता–पिता, शिक्षक या किसी अन्य विश्वसनीय व्यक्ति से बात करें।

शिक्षकों की भूमिका इसमें बहुत महत्वपूर्ण होती है। वे एक सुरक्षित और भरोसेमंद वातावरण तैयार कर सकते हैं, जहां छात्राएं बिना झिझक अपने सवाल पूछ सकें। साथ ही, माता–पिता को भी इन विषयों पर खुलकर संवाद करना चाहिए, ताकि बच्चियों को सही मार्गदर्शन मिल सके। माहवारी और अच्छे–बुरे स्पर्श की जानकारी केवल स्वास्थ्य या सुरक्षा का विषय नहीं है, बल्कि यह आत्मसम्मान और अधिकारों से जुड़ा मुद्दा है। जब विद्यालय, परिवार और समाज मिलकर इस दिशा में कार्य करेंगे, तभी हम एक सुरक्षित और जागरूक वातावरण तैयार कर पाएंगे।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

गणित विषय के अंतर्गत 'ज्यामिति' पर नवाचार का उपयोग

-मुकेश कुमार शर्मा

उद्देश्य: ज्यामिति (Geometry) की अमूर्त और कठिन मानी जाने वाली अवधारणाओं को कबाड़ से जुगाड़, कला–एकीकरण और डिजिटल टूल्स के माध्यम से व्यावहारिक, जीवंत और मनोरंजक बनाना।

प्रस्तावना: ज्यामिति में नवाचार की आवश्यकता क्यों?

गणित में ज्यामिति एक ऐसा क्षेत्र है जिसे छात्र अक्सर चित्रों और सूत्रों के माध्यम से रटने का प्रयास करते हैं। जब तक छात्र आकृतियों के गुणों को स्वयं महसूस नहीं करते या उन्हें गतिशील रूप से बदलते नहीं देखते, तब तक उनका स्थानिक बोध (Spatial Understanding) विकसित नहीं होता। नवाचार (Innovation) शिक्षण प्रक्रिया को शिक्षक–केंद्रित से छात्र–केंद्रित बनाता है, जिससे सीखना स्थायी हो जाता है।

मुख्य नवाचारी दृष्टिकोण (Innovative Approaches)

1. जियोबोर्ड (Geoboard) – स्पर्श और दृश्य आधारित नवाचार (Tactile Learning) कबाड़ से जुगाड़ तकनीक: प्लाईवुड या गत्ते के बेकार टुकड़ों पर निश्चित ग्रिड दूरी (जैसे 2–2 सेमी) पर कीलें या पिन लगाकर इसे आसानी से बनाया जा सकता है।

उपयोग: छात्र रंग–बिरंगे रबर बैंड को कीलों में फंसाकर विभिन्न आकृतियां (त्रिभुज, वर्ग,आयत, पंचभुज) स्वयं बनाते हैं।

अवधारणा की समझ: इसके माध्यम से छात्र केवल सूत्र रटने के बजाय, ग्रिड के खानों को गिनकर परिमाप (Perimeter) और क्षेत्रफल (Area) की वास्तविक अवधारणा को लाइव समझ सकते हैं।

2. पेपर फोल्डिंग और ओरिगामी (Origami Techniques)

गतिविधि: बिना किसी कैंची या गोंद के, केवल कागज़ को विशेष तरीकों से मोड़कर ज्यामितीय प्रमेयों को सिद्ध करना।

उदाहरण: कागज को मोड़कर वर्ग (Square) से समद्विबाहु त्रिभुज (Isosceles Triangle) बनाना, या मोड़कर समांतर रेखाएं (Parallel Lines) और उनके बीच एकांतर कोण (Alternate Angles) प्रदर्शित करना।

3. जियोजेब्रा (GeoGebra) – डिजिटल और गतिशील नवाचार (Dynamic Mathematics Tool) सॉफ्टवेयर का जादू: यह स्मार्टफोन और कंप्यूटर लैब के लिए एक मुफ्त टूल है। इसमें आकृतियाँ स्थिर नहीं होतीं, बल्कि गतिशील (Dynamic) होती हैं।

जादू: छात्र स्क्रीन पर एक वृत्त (Circle) बनाकर उसके केंद्र और परिधि पर कोण खींचते हैं।

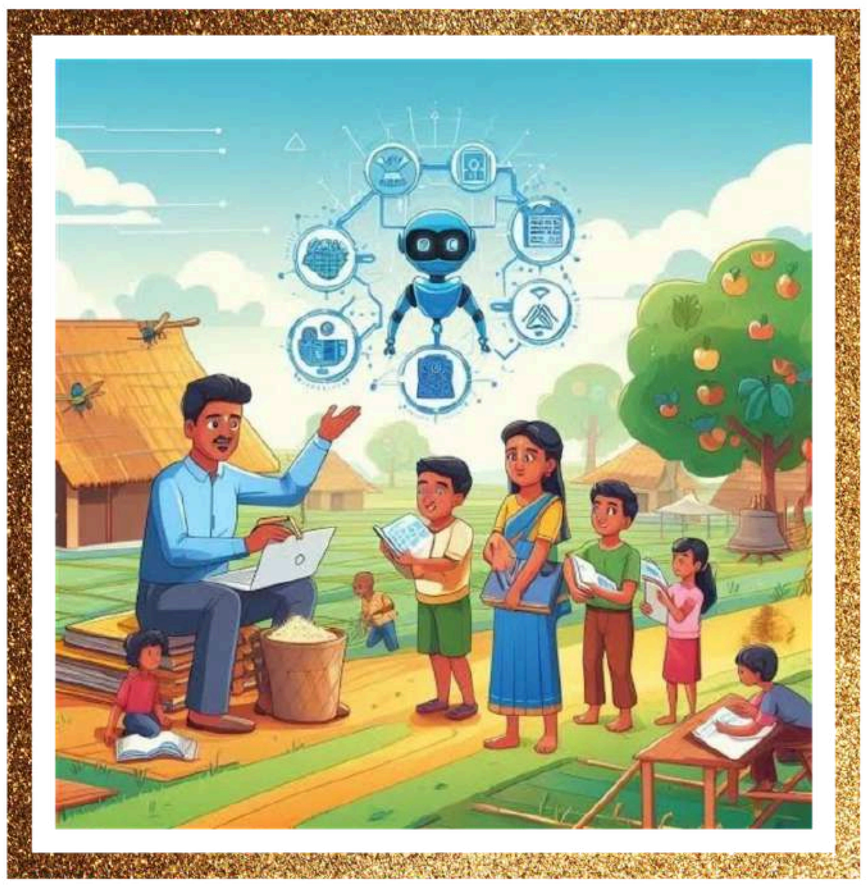

जब वे वृत्त के आकार या बिंदुओं को माउस से खींचकर बदलते हैं, तब भी कोणों का अनुपात (केंद्र का कोण परिधि के कोण का दोगुना होता है) हमेशा समान रहता है। यह दृश्य अनुभव रटने की प्रवृत्ति को पूरी तरह खत्म कर देता है।

4. कला–एकीकृत अधिगम (Art–Integrated Learning)

स्थानीय कला और रंगोली: बिहार की सांस्कृतिक धरोहरों या त्योहारों पर बनने वाली रंगोली और 'वार्ली आर्ट' का बारीकी से अध्ययन करना। इनमें केवल रेखाओं, वृत्तों और त्रिभुजों का उपयोग होता है। छात्रों से ऐसी कलाकृतियां बनवाना जिसमें वे विभिन्न आकृतियों के संयोजन (Composition of Shapes) को समझ सकें।

5. कहानी और खेल–आधारित नवाचार (Story & Gamification)

ज्यामितीय खजाने की खोज (Geometry Treasure Hunt): स्कूल परिसर में एक गेम का आयोजन करें जहाँ सुराग (Clues) ज्यामितीय भाषा में लिखे हों।
जैसे: "उस वस्तु के पास जाइए जिसके पास 4 समकोण (Right Angles) हैं और सम्मुख भुजाएं (Opposite Sides) बराबर हैं (अर्थात ब्लैकबर्बोर्ड या दरवाजा)।" इससे छात्र अपने आस–पास की दुनिया में ज्यामिति को ढूंढना शुरू करते हैं।
आकृतियों की अदालत (Role Play): कक्षा में एक नाटक का आयोजन करें जहाँ 'वत्त', 'वर्ग' और 'त्रिभुज' आपस में बहस कर रहे हैं कि कौन सबसे महत्वपूर्ण है। हर आकृति अपने गुण (Properties) और सूत्रों को अपनी विशेषताओं के रूप में बताएगी।

6. मूल्यांकन में नवाचार (Innovative Assessment)

3D मॉडल प्रदर्शनी: कबाड़ से जुगाड़ (Waste to Wealth) तकनीक का उपयोग करके छात्रों से पुरानी चूड़ियों, माचिस की तीलियों, झाड़ू की सींकों और गत्ते से ज्यामितीय पार्क या शहर का मॉडल बनवाना।

7. ज्यामितीय फोटोग्राफी (Geometry Photography): छात्रों को टास्क दें कि वे अपने घर या गाँव में घूमकर ऐसी तस्वीरें खींचें जहाँ ज्यामितीय प्रतिरूप (Patterns) दिखते हो (जैसे– पुल के खंभों में त्रिभुज, छतों की डिजाइन, साइकिल का पहिया) और उस पर एक छोटी रिपोर्ट लिखवाना।

निष्कर्ष:– ज्यामिति में नवाचार का उद्देश्य केवल गणित को आसान बनाना नहीं है, बल्कि छात्रों में तार्किक सोच, समस्या समाधान क्षमता और स्थानिक बुद्धिमत्ता (Spatial Intelligence) का निर्माण करना है। जब छात्र अमूर्त सिद्धांतों को अपनी आँखों के सामने साकार होते देखते हैं, तो उनका गणित के प्रति डर दूर होता है और वे विषय से प्रेम करने लगते हैं।

NEP: नया सवेरा

एक नई पहल

-राघवेंद्र कुमार झा

जरूरत के मुताबिक हमारी शैक्षिक नीतियां बदलती रही हैं। 1968 के बाद 1986 में शिक्षा नीति आई थी। पुनः 34 वर्षों बाद 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश की शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव है। इसका मुख्य उद्देश्य रटने की पद्धति को समाप्त कर छात्रों में कौशल, तार्किक एवं आलोचनात्मक सोच और समग्र विकास को बढ़ावा देना है। समग्र प्रदर्शन का आकलन करने के लिए एक नए राष्ट्रीय मूल्यांकन केन्द्र परख

(PARAKH) की स्थापना की गई है। NEP 2020 में पुरानी 10+2 की स्कूली शिक्षा व्यवस्था के स्थान पर बच्चों की उम्र और सीखने के स्तर पर आधारित 5 + 3 + 3+4 का शैक्षणिक ढांचा लाया गया है। 3 से 8 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए 5 वर्ष के फाऊंडेशनल स्टेज में 3 वर्ष का प्री–स्कूल शिक्षा और 2 वर्ष का कक्षा 1 और 2 का प्राथमिक शिक्षा शामिल है। इस स्टेज में विद्यालयों द्वारा खेलकूद पर अधिक जोर दिया जा रहा है। नामित शिक्षक/ शिक्षिकाएं विभाग द्वारा आयोजित चहक प्रशिक्षण प्राप्त कर चहक गतिविधियाँ जैसे गीत, खेल आदि के माध्यम से विद्यालयों में इसका क्रियावायन कर रहे हैं। 3 वर्षों के प्रिपेरेटरी स्टेज में 8 से 11 वर्ष के उम्र के बच्चों के लिए कक्षा 3 से 5 के बच्चों हेतु भाषा, विज्ञान और गणित जैसे बुनियादी विषयों की पढ़ाई कराई जा रही है। पुनः 3 वर्षों के मिडिल स्कूल स्टेज में 11 से 14 वर्ष उम्र के बच्चों के लिए कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा है जिसमें व्यावसायिक शिक्षा और कोडिंग की शुरुआत शामिल है।

कक्षा 5 तक एवं इससे भी बढ़कर कक्षा 8 तक की पढ़ाई मातृभाषा या क्षेत्रीय या स्थानीय भाषा माध्यम में कराए जाने पर जोर दिया जा रहा है। यहाँ एक्सपेरिमेंट बेस्ड लर्निंग से बच्चों का कौशल विकास होगा। 4 वर्षों के हाई स्कूल या सेकेंडरी स्टेज में 14 से 18 वर्ष उम्र के बच्चों के लिए कक्षा 9 से 12वीं के लिए शिक्षा है। इसमें छात्रों को कला, विज्ञान और वाणिज्य जैसे विषयों को चुनने की स्वतंत्रता है यानि इसे अधिक लचीला बनाया गया है। ड्रॉप आउट अर्थात् छीजित बच्चों को ट्रैक कर उन्हें पुनः मुख्य धारा में जोड़ने के लिए सर्वे का सहारा लिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा में छात्र कभी भी अपनी डिग्री बीच में छोड़ सकते हैं और बाद में वहीं से पढ़ाई जारी रख सकते हैं।

एक साल का पाठ्यक्रम पूरा करने पर सर्टिफिकेट, 2 साल पर डिप्लोमा और 3 साल पर स्नातक डिग्री मिलेगी। परन्तु, शोध करने वाले छात्रों के लिए 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। छात्रों के डिग्री क्रेडिट्स को डिजिटल रूप में स्टोर किए जाने का प्रावधान है। इस नीति के क्रियान्वयन में GST अर्थात् G= Guardian (अभिभावक), S= Student (विद्यार्थी) और T= Teacher (शिक्षक) की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति और पदस्थापन की गई है। पुनः छात्र अनुपात में इसका रेशनलाइजेशन की प्रक्रिया की जा रही है। इस नीति के अनुसार प्रत्येक शिक्षक को अपनी गुणवत्ता बढ़ाने और आधुनिक तकनीक से अद्यतन रखने हेतु स्वयं के व्यावसायिक विकास हेतु प्रत्येक वर्ष कम–से–कम 50 घंटे का प्रशिक्षण विभाग द्वारा अनिवार्य रूप से दिया जा रहा है। निपुण भारत मिशन के तहत 2026–27 तक कक्षा 3 के प्रत्येक बच्चे को पढ़ना, लिखना और बुनियादी गणितीय गणनाएं करना सीखाने को सुनिश्चित करने के लिए FLN (बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान) को प्राथमिकता दी गई है। इस हेतु विद्यालयों में पीयर लर्निंग कक्षाओं का संचालन भी किया जा रहा है। वर्तमान में कक्षा 4– 6 के बच्चों में भी FLN कौशल विकास के लिए अपने राज्य बिहार में प्रथम संस्था ने शिक्षा विभाग के साथ 2026–27 के लिए एक साल के तय कार्यक्रम में इन कक्षा के बच्चों के साथ रोज एक पीरियड भाषा और एक पीरियड गणित की खेल आधारित गतिविधियां कराई जाने की शुरुआत की है। निश्चित ही इस प्रयास से बच्चों की बुनियाद मजबूत हो रही है। इस तरह इस नीति में उम्र के प्रत्येक पड़ाव पर विद्यार्थियों के लिए क्या रुचिपूर्ण और सुरक्षित है और क्या नहीं, स्कूल के पूरे पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

विविध
खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

पश्चिमीकरण का भारतीय संस्कृति पर कुप्रभाव

-बेबी अर्चना

आज के समय में जितना भी पश्चिमीकरण देखने को मिल रहा है इससे हमारे देश की संस्कृति कहीं न कहीं छूटती सी जा रही है। आधुनिकता की चकाचौंध में हम अपनी सभ्यता–संस्कृति और अपने संस्कारों को किस तरह निभा रहे हैं यह सोचनीय विषय बन गया है। शुरू से ही हमारे यहाँ की मान्यता है कि स्त्रियों को देवी का दर्ज़ा दिया गया है पर क्या ऐसा होता है??

आज हर जगह घर–परिवार हो या कार्यक्षेत्र औरतों को पुरूष की तुलना में कम ही आंका जाता है। रोज– रोज हर समय कोई न कोई निर्भया, आशिफा की आहुति होती रहती है।

क्या यही हमारी संस्कृति है?

जहाँ की सनातन संस्कृति में "यत्र नार्यस्ते पूज्यन्ते ,रमयन्ते तत्र देवता " का पुट होता था वहाँ की संस्कृति कितने गर्त में जा रही है, बहुत ही विचारणीय है। आज के बच्चे भी पश्चिमीकरण के दौर में अपनी संस्कृति, अपने शिष्टाचार को भूलते जा रहे हैं। यदि बच्चे पढ़ लिख कर ऊँची नौकरी करने लगते हैं तो अपने दोस्तों के सामने अपने गरीब माँ बाप को पहचानते तक नहीं हैं। कैसी स्थिति हो गई है कि जिस माँ बाप ने उसे जन्म दिया उसे ही नहीं पहचानते ।इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है कि आज का एकल परिवार।

एकल परिवार में बच्चे अपने बुजुर्गों के सान्निध्य से कट जाते हैं जिससे उसे नैतिकता और संस्कार का पाठ पूर्णरूप से नहीं मिल पाता। साथ ही साथ आज के कामकाजी अभिभावक अपने बच्चों को समुचित समय नहीं दे पाते जिसका परिणाम यह होता है कि बच्चे माँ बाप के सान्निध्य से कट कर एक अलग से माहौल में ढल जाते हैं नतीजतन माँ–बाप और बच्चों के बीच एक रिक्तता बनती चली जाती है। एक चीज और कि अगर कोई विधवा है तो उसे अपनी जिंदगी खुलकर जीने का अधिकार नहीं है, आखिर क्यों? क्या पुरुष अगर विधुर हो जाए तो उसके साथ ऐसा होता है? नहीं न, तो ये कौन सा पुरूष प्रधान समाज है जिसमें विधवा के लिए बेरंग जीवन का मानक तय किया गया है।

क्या एक विधवा को जीने का अधिकार नहीं या उसे खुश होने का ही अधिकार नहीं है? पुरुष प्रधान समाज में पुरुष जितने चाहे विवाह करे सब जायज है पर एक विधवा के लिए यह सब सोचना भी गलत है ।ऐसा सोचना भी पाप माना जाता है, आखिर क्यों? अगर बात बराबरी की है तो दोनों को समान अधिकार मिलने चाहिए पर हमेशा से ही औरतों के पैरों में रूढ़िवादी परंपरा की जंजीर बाँध दी जाती है ।

यदि औरतें यहाँ कुछ आवाज़ उठाती हैं तो उसे संस्कारों से जोड़ दिया जाता है । क्या संस्कार यही सिखलाते हैं कि गलत का भी प्रतिवाद नहीं करना चाहिए ।आजकल हर घरों में देखने को मिलता है कि यदि बच्चे अभिभावक के खिलाफ आवाज उठाते हैं तो वहाँ अपनी कमी छिपाने के लिए गाली–गलौज, मारपीट आदि करने लगते हैं । मुँह बंद कर हर बात मानना, क्या यही संस्कार है?

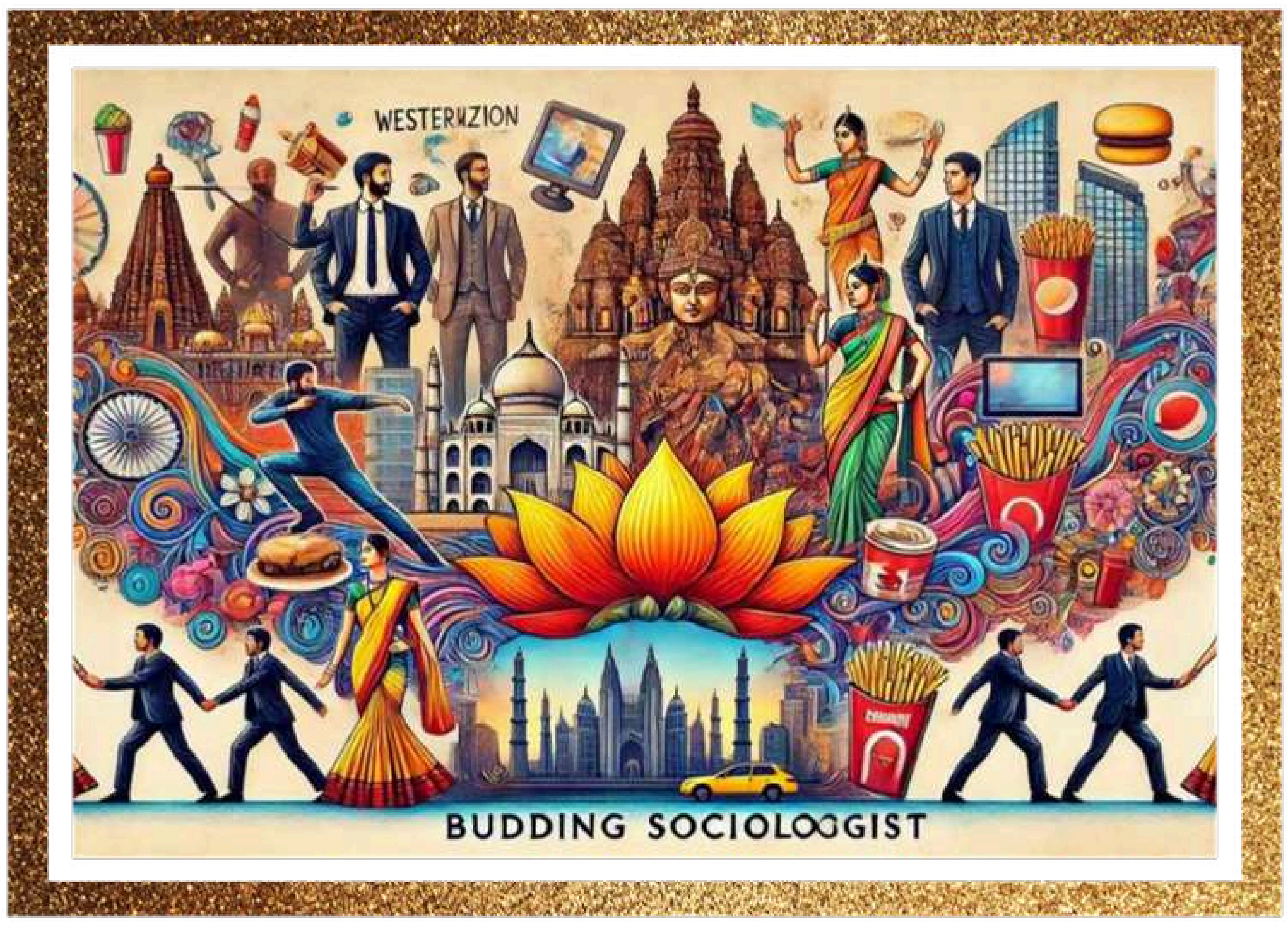

यदि ऐसा है तो यह बहुत ही खोखली बात है । जो संस्कार हमें सही गलत की पहचान होने पर भी चुपचाप अपने बड़ो के आगे मुँह बंद करना सिखाता है तो यह बहुत ही गलत बात है ।

हमें अपनी संस्कृति पर गर्व होना चाहिए पर वर्तमान में यह गर्त में जो गिरती जा रही है उसपर भी गहन विचार विमर्श करने की आवश्यकता है । सवाल यह नहीं है कि आज के बच्चों में नैतिकता और संस्कार की कमी दिख रही है । हम अपनी कमी को दूर करने के लिए आज की युवा पीढ़ी पर पूर्ण दोषारोपण कर देते हैं पर क्या यह उचित है? सबसे बड़ा सुलगता हुआ सवाल यह है कि इस कमी को दूर कैसे करें ।

आधुनिकता के इस दौर में जो एक खाई सी बन गई है उसे कैसे पाटा जाए। यह एक चिंतनीय और विचारणीय प्रश्न है । हमलोगों को इस बारे में सोचने का प्रयास करना चाहिए ताकि जो हमारी संस्कृति में समाहित है उसकी अक्षुण्णता बरकरार रहे .....

विविध
खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

"संगीत, साहित्य और शिक्षा : व्यक्तित्व निर्माण के तीन आधार"

-चंद्रकांत कुमार

भूमिका

आज विद्यालयों में पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक एक सामान्य समस्या का अनुभव कर रहे हैं। विद्यार्थियों के पास जानकारी तो बहुत है, लेकिन धैर्य, संवेदनशीलता, एकाग्रता और सांस्कृतिक समझ का अभाव बढ़ता जा रहा है। मोबाइल और सोशल मीडिया की दुनिया में बच्चे शीघ्र मनोरंजन तो खोज लेते हैं, परंतु गहराई से पढ़ना, सुनना, समझना और अभ्यास करना उन्हें कठिन प्रतीत होता है। संगीत के विद्यार्थियों में नियमित रियाज़ की कमी, साहित्य के प्रति घटती रुचि और शिक्षा को केवल परीक्षा तथा नौकरी तक सीमित समझने की प्रवृत्ति चिंताजनक है। अधिकांश छात्र फिल्मी गीतों और तात्कालिक मनोरंजन तक सीमित रह जाते हैं, जबकि शास्त्रीय संगीत, लोक परंपराओं और गंभीर साहित्य के अध्ययन में अपेक्षित रुचि नहीं दिखाते। दूसरी ओर, गणित, विज्ञान और प्रतियोगी परीक्षाओं के दबाव के कारण कला एवं संस्कृति आधारित विषयों को गौण समझा जाने लगा है। एक शिक्षक के रूप में यह भी अनुभव होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की शैली अलग होती है, किंतु कई बार पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं और रुचियों को पर्याप्त अवसर नहीं दे पातीं। परिणामस्वरूप संगीत, साहित्य और शिक्षा—जो व्यक्तित्व निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं—धीरे–धीरे विद्यार्थियों के जीवन से दूर होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि हम पुनः विचार करें कि संगीत, साहित्य और शिक्षा केवल विषय नहीं, बल्कि मनुष्य को संवेदनशील, संस्कारित और जिम्मेदार नागरिक बनाने वाले आधार स्तंभ हैं। भारतीय संस्कृति और बिहार की गौरवशाली ज्ञान–परंपरा भी यही संदेश देती है कि व्यक्तित्व का विकास केवल सूचना से नहीं, बल्कि संवेदना, संस्कार और सतत साधना से होता है।

संस्कृत साहित्य के महान आचार्य महर्षि भर्तृहरि ने अपने नीतिशतकम् में लिखा है—

> "साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
> तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥"

अर्थात् जो मनुष्य साहित्य, संगीत और कला से रहित है, वह बिना पूँछ और सींग वाले पशु के समान है। यदि वह घास नहीं खाता, फिर भी जीवित है, तो यह पशुओं का भी परम सौभाग्य है। यह श्लोक मानव जीवन में ज्ञान, संवेदना और संस्कृति के महत्व को रेखांकित करता है।

मनुष्य को पशुता से मनुष्यता की ओर ले जाने का कार्य केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि उसकी चेतना, संस्कार और विवेक करते हैं। किसी भी सभ्य समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण उसके नागरिकों के चरित्र और व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। व्यक्तित्व निर्माण के अनेक साधन हो सकते हैं, किंतु संगीत, साहित्य और शिक्षा ऐसे तीन आधार हैं जो मनुष्य के मन, मस्तिष्क और आत्मा को संतुलित रूप से विकसित करते हैं। भारतीय संस्कृति में इन तीनों को सदैव जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। विशेष रूप से बिहार की धरती, जो ज्ञान, संस्कृति और अध्यात्म की प्राचीन राजधानी रही है, इन तीनों क्षेत्रों की गौरवशाली परंपराओं की साक्षी है।

संगीत : आत्मा का स्पंदन और संवेदना का संस्कार

संगीत केवल गाने–बजाने की कला नहीं, बल्कि गायन, वादन और नृत्य का समन्वित विज्ञान है। भारतीय चिंतन में संगीत को "नाद ब्रह्म" कहा गया है। अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि ध्वनि और स्पंदन से निर्मित है तथा संगीत उसी दिव्य नाद की अभिव्यक्ति है। संगीत मनुष्य के भीतर सौंदर्यबोध, अनुशासन, धैर्य और संवेदनशीलता का विकास करता है। नियमित रियाज़ व्यक्ति को परिश्रम, एकाग्रता और आत्मसंयम का पाठ पढ़ाता है। आधुनिक मनोविज्ञान भी स्वीकार करता है कि संगीत तनाव, अवसाद और मानसिक अशांति को कम करने में सहायक है। आज विश्व के अनेक देशों में संगीत–चिकित्सा (Music Therapy) का प्रयोग विभिन्न रोगों के उपचार में किया जा रहा है। भारतीय संगीत विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संगीत परंपराओं में से एक है। वेदों में विशेषतः सामवेद को संगीत का मूल स्रोत माना जाता है। भक्ति आंदोलन से लेकर स्वतंत्रता संग्राम तक संगीत ने समाज को जोड़ने और जनचेतना जगाने का कार्य किया है। बिहार का संगीत इतिहास विशेष रूप से गौरवपूर्ण रहा है। बेतिया घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रतिष्ठित परंपराओं में गिना जाता है। ध्रुपद गायन की विश्वविख्यात परंपरा को मल्लिक बंधुओं ने नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ाँ का जन्म बिहार के डुमराँव में हुआ था, जिन्होंने शहनाई को विश्व मंच पर प्रतिष्ठा दिलाई। इसके अतिरिक्त सोहर, चैती, कजरी, झूमर, पूर्वी और समदाउन जैसे लोकगीत बिहार की लोकसंस्कृति की आत्मा हैं। वास्तव में संगीत व्यक्ति को केवल कलाकार नहीं बनाता, बल्कि उसे अधिक मानवीय, सहृदय और संवेदनशील बनाता है।

साहित्य : विचार, संस्कृति और चेतना का दर्पण

साहित्य का मूल अर्थ है—"हित के साथ" अर्थात् ऐसा सृजन जो मानव समाज के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे। साहित्य केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि मानव अनुभवों, भावनाओं और चिंतन का सृजनात्मक इतिहास है।

कहा जाता है—"साहित्य समाज का दर्पण है।" यह समाज की अच्छाइयों और बुराइयों दोनों को प्रतिबिंबित करता है। साहित्य व्यक्ति को विचारशील बनाता है, उसके भीतर प्रश्न करने की क्षमता विकसित करता है तथा नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करता है।

भारतीय साहित्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक ज्ञान और मानवीय मूल्यों की एक अखंड धारा प्रवाहित होती रही है। साहित्य हमें इतिहास से परिचित कराता है, वर्तमान को समझने की दृष्टि देता है और भविष्य निर्माण की प्रेरणा प्रदान करता है।

बिहार को साहित्य और ज्ञान की तपोभूमि कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी ओजस्वी कविताओं से राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने अपने उपन्यास मैला आँचल के माध्यम से ग्रामीण भारत की संवेदनाओं को स्वर दिया। बाबा नागार्जुन, रामवृक्ष बेनीपुरी, आचार्य शिवपूजन सहाय और जानकीवल्लभ शास्त्री जैसे साहित्यकारों ने समाज को नई दिशा प्रदान की।

आज जब सूचना का विस्फोट हो रहा है, तब साहित्य मनुष्य को विवेकपूर्ण चयन और गहन चिंतन की क्षमता प्रदान करता है। पुस्तकें केवल ज्ञान नहीं देतीं, वे मनुष्य को मनुष्य बनाती हैं।

शिक्षा : विवेक, चरित्र और राष्ट्रनिर्माण का आधार

शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक बनाना है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था—"शिक्षा वह है जो मनुष्य में चरित्र का निर्माण करे, मन का बल बढ़ाए और उसे अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाए।"

शिक्षा मनुष्य को अज्ञानता के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है।

यह उसे सही और गलत में अंतर करना सिखाती है, तर्कशक्ति विकसित करती है तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराती है।

भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा विश्व के लिए प्रेरणा रही है। विशेष रूप से बिहार इस गौरवशाली परंपरा का केंद्र रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय केवल भारत ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के महानतम शिक्षा केंद्रों में शामिल थे। चीन, कोरिया, तिब्बत, श्रीलंका और मध्य एशिया से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन हेतु आते थे।

भगवान बुद्ध और भगवान महावीर की कर्मभूमि बिहार ने विश्व को शांति, अहिंसा, करुणा और प्रज्ञा का संदेश दिया। यही कारण है कि बिहार केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि ज्ञान और संस्कृति की एक जीवंत परंपरा है।

आज के वैश्विक युग में शिक्षा केवल सूचना प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि कौशल विकास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों के विकास का सशक्त साधन है।

तीनों का समन्वय : व्यक्तित्व निर्माण की त्रिवेणी

संगीत, साहित्य और शिक्षा को अलग–अलग नहीं देखा जा सकता।

ये तीनों मिलकर व्यक्तित्व निर्माण की त्रिवेणी बनाते हैं।

शिक्षा मनुष्य को ज्ञान और विवेक प्रदान करती है। साहित्य उसे संवेदनशील और विचारशील बनाता है। संगीत उसके जीवन में लय, संतुलन और सौंदर्य का संचार करता है।

यदि शिक्षा केवल बुद्धि विकसित करे और संवेदना न दे, तो व्यक्ति यांत्रिक बन सकता है। यदि साहित्य हो लेकिन विवेक न हो, तो विचार दिशाहीन हो सकते हैं। यदि संगीत हो लेकिन ज्ञान और मूल्य न हों, तो उसका प्रभाव अधूरा रह जाएगा। इसलिए इन तीनों का संतुलित समन्वय ही एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करता है। ऐसा व्यक्ति न केवल अपने जीवन में सफल होता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी उपयोगी सिद्ध होता है।

उपसंहार

आज का युग तकनीकी प्रगति, प्रतिस्पर्धा और भौतिक उपलब्धियों का युग है। इसके बावजूद मानसिक तनाव, नैतिक संकट और सामाजिक विघटन जैसी चुनौतियाँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसे समय में संगीत, साहित्य और शिक्षा की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालयों, महाविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं में इन तीनों क्षेत्रों को समान महत्व दिया जाए। जब शिक्षा में साहित्य की संवेदना और संगीत की सौंदर्य चेतना का समावेश होगा, तभी हम ऐसे नागरिक तैयार कर पाएँगे जो ज्ञानवान होने के साथ–साथ संवेदनशील, नैतिक और राष्ट्रनिष्ठ भी हों।

निस्संदेह, संगीत, साहित्य और शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण के तीन ऐसे आधार हैं जिन पर एक सशक्त, संस्कारित और प्रगतिशील भारत का भविष्य निर्मित हो सकता है। यही हमारी सांस्कृतिक विरासत का संदेश है और यही मानव जीवन की वास्तविक सार्थकता भी।

> "शिक्षा मनुष्य को सोचने की शक्ति देती है, साहित्य उसे महसूस करना सिखाता है और संगीत उसके हृदय को संवेदना की लय से भर देता है; इन तीनों का संगम ही ऐसा व्यक्तित्व गढ़ता है जो ज्ञान में प्रखर, चरित्र में श्रेष्ठ और मानवता में समृद्ध होता है।"

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

बाल अपराध की बढ़ती प्रवृत्ति और उसका निदान।

-आशीष अम्बर

बच्चों को भगवान का उपहार माना जाता है और वे सबसे बड़ी व्यक्तिगत और राष्ट्रीय संपत्ति है। व्यक्ति, माता – पिता, अभिभावक और समग्र रूप से समाज के रूप में हमारा कर्तव्य है कि बच्चों को स्वास्थ्य सामाजिक – सांस्कृतिक वातावरण में बड़ा होने का अवसर दिया जाए ताकि वे जिम्मेदार नागरिक, शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सतर्क और नैतिक रूप से स्वस्थ बन सकें। विभिन्न कारणों से कुछ बच्चें स्थापित सामाजिक और कानूनी नियमों का पालन नहीं करते हैं। ऐसे बच्चे अक्सर आपराधिक व्यवहार में शामिल हो जाते हैं जिसे बाल अपराध या किशोर अपराध के रूप में जाना जाता है।

हाल के वर्षों में, बाल अपराध में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो एक चिंताजनक मुद्दा है। बाल अपराध का तात्पर्य गैरकानूनी गतिविधियों में नाबालिगों की भागीदारी से है, जिसके अक्सर न केवल युवा (आने वाले पीढ़ी) वर्ग के लिए वरण पूरे समाज के लिए विनाशकारी परिणाम होते हैं।

बाल अपराध के कारण :– कोई भी बालक जन्मजात अपराधी नहीं होता । परिस्थितियां उसे ऐसा बनाती है। घर के अंदर और बाहर सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण, किसी के जीवन और समग्र व्यक्तित्व की आकर देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

दुनियाभर में होने वाले बाल अपराधों से जुड़े कुछ सामान्य कारण हैं– गरीबी, मादक द्रव्यों का सेवन, असामाजिक सहकर्मी समूह, दुर्व्यवहार करने वाले माता – पिता, एकल परिवार, पारिवारिक हिंसा, बाल यौन– शोषण और सोशल मीडिया की भूमिका।

बाल अपराध के मुख्य कारण इस प्रकार संदर्भित है।

1. शिक्षा का अभाव और गरीबी :– भारत में बाल अपराध के प्राथमिक कारणों में से एक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तक पहुंच की कमी और व्यापक गरीबी है। आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के की बच्चों को उचित शिक्षा या मार्गदर्शन नहीं मिलता है, जिसके कारण वे आपराधिक गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं।

2. माता–पिता की अपर्याप्त देखभाल और उपेक्षा :– एक अन्य कारक अपर्याप्त माता–पिता की देखभाल और उपेक्षा है, जो माता–पिता गुजारा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं वे अपने बच्चों की आवश्यक ध्यान और देखभाल प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

3. साथियों के दवाब का प्रभाव :– साथियों का दवाब भी बालकों के व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गलत संगत के चलते वे बाल अपराध की ओर उन्मुख होते चले जाते हैं।

4. नशीली दवाओं और मादक द्रव्यों के सेवन तक आसान पहुंच :– हमारे देश भारत में नशीली दवाओं की आसान उपलब्धता और मादक द्रव्यों का सेवन एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। कई बालक एवं किशोर नशीली दवाओं की लत का शिकार हो जाते हैं, जिससे आपराधिक गतिविधियों की संभावना बढ़ जाती है।

5. मीडिया और हिंसक सामग्री का प्रभाव:– मीडिया के प्रभाव और हिंसक सामग्री के प्रदर्शन को कम करके नहीं आंका जा सकता। फिल्मों, टेलीविजन शो और ऑनलाइन सोशल मीडिया प्लेटफार्म (फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स आदि) पर हिंसा का अत्यधिक चित्रण बालमन को असंवेदनशील बना सकता है। अतः बचना जरूरी है।

निदान :– बच्चों में उनके आपराधिक व्यवहार को रोकने के लिए सामाजिक – शैक्षिक सहायता प्रदान करना आवश्यक है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सहायता प्रणालियों तक पहुंच में सुधार से बाल अपराध को कड़ी हदतक कम किया जा सकता है।

बच्चों को उनके जरूरत के अनुसार सारी सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।

ऐसे ही और गाथाओं को पढ़ने के लिए दिए QR कोड को स्कैन करें

यात्रा वृतांत

NILD कोलकाता : सेवा, संवेदना और पुनर्वास की एक जीवंत यात्रा

-बिनोद कुमार मंडल

अपनी बेटी का BPT (Bachelor of Physiotherapy)भौतिक चिकित्सा स्नातक अर्थात् फिजियोथेरेपी स्नातक में नामांकन कराने हेतु कोलकाता स्थित NILD (National Institute for Locomotor Disabilities) जाने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी दरम्यान मुझे शैक्षणिक ज्ञान

वृद्धि तथा व्यावहारिक अनुभव अर्जित करने के उद्देश्य से NILD परिसर के परिभ्रमण का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। यह यात्रा मेरे लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक तथा स्मरणीय रही।

यात्रा का आरम्भ कटिहार जंक्शन से हुआ। निर्धारित समय पर मैं, मेरी पत्नी और बेटी ट्रेन द्वारा कोलकाता के लिए रवाना हुए। रेलयात्रा के दौरान खिड़की से दिखाई देने वाले हरे–भरे खेत, नदियाँ, गाँव तथा छोटे–बड़े स्टेशन मन

को अत्यंत आकर्षित कर रहे थे। सहयात्रियों के साथ बातचीत और यात्रा के अनुभवों ने सफर को और भी आनंददायक बना दिया। अगले दिन हम कोलकाता पहुँचे। कोलकाता का विशाल महानगरीय वातावरण, चौड़ी–चौड़ी सड़कें, ऐतिहासिक इमारतें तथा व्यस्त जनजीवन देखकर मन रोमांचित हो उठा। थोड़े

विश्राम के बाद हमलोग NILD के लिए प्रस्थान किए। यह कोलकाता के दक्षिणी हिस्से में, बाँसद्रोणी के शांत इलाक़े में स्थित है। NILD भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत संचालित एक प्रमुख संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1978 में हुई थी तथा यह दिव्यांगजनों के पुनर्वास, शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करता है। NILD पहुँचते ही ऐसा लगा मानो शहर की चहल–पहल अचानक रुक गई हो।

परिसर में प्रवेश करते ही स्वच्छ वातावरण, हरे–भरे पेड़ और व्हीलचेयर–अनुकूल चौड़े मार्ग स्वागत करते हैं। हल्की सुबह की किरणें इमारतों पर गिरकर एक सुकून भरा दृश्य बना रही थीं, जैसे यह संस्थान सिर्फ इलाज ही नहीं बल्कि आशा भी बाँटता हो।

पहली झलक – अनुशासन और संवेदना का मेल

मुख्य भवन में दाखिल होते ही रिसेप्शन का सुसंगठित तंत्र प्रभावित करता है। जानकारी देने वाले कर्मचारी धैर्यपूर्वक हर प्रश्न का उत्तर देते हैं। प्रतीक्षा कक्ष में बैठें लोग–बच्चे, युवा, बुजुर्ग–सभी अलग–अलग कारणों से आए थे, पर सबके
चेहरों पर एक समान उम्मीद दिखाई देती थी। दीवारों पर लगी निर्देशिका और विभिन्न विभागों की ओर जाते रास्ते साफ–सुथरे और व्यवस्थित थे, जो इस संस्थान की दशकों की मेहनत और प्रतिष्ठा का प्रमाण–सा लगते हैं। सर्वप्रथम हमलोग रिसेप्शन से नामांकन कहाँ हो रही है इसकी जानकारी लिया। फिर बताए गए स्थान पर पहुँचकर नामांकन की प्रक्रिया पूरी की। नामांकन कराने के पश्चात परिसर परिभ्रमण करने का फैसला किया।

थेरपी विभाग — पुनर्वास की धड़कन

फिजियोथेरेपी और ऑक्युपेशनल थेरेपी विभागों का माहौल सबसे ज्यादा जीवंत दिखाई दिया।

एक ओर छोटे बच्चे थे–जो बैलेंस बोर्ड, स्विंग थेरपी और रंग–बिरंगे उपकरणों के बीच अपनी क्षमताएँ निखार रहे थे–उनके साथ काम करते प्रशिक्षक, जिनकी आवाज़ में उत्साह भी था और अपनापन भी।

दूसरी ओर वयस्क मरीज थे, जिनमें कुछ स्ट्रोक से उबर रहे थे, कुछ दुर्घटना के बाद चलना सीख रहे थे, और कुछ कृत्रिम अंग के साथ नए कदमों की शुरुआत कर रहे थे।

मशीनों की हल्की गुनगुनाहट, फुट थेरेपी की ताल, और विशेषज्ञों के निर्देशों की आवाजें सब मिलकर एक सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण बनाती थीं।

वर्कशॉप – विज्ञान और मानवीयता का संगम

NILD की Prosthetics & Orthotics Workshop किसी प्रयोगशाला से कम नहीं लगती। यहाँ प्रशिक्षण प्राप्त तकनीशियन और इंजीनियर मरीजों की ज़रूरतों के अनुसार कृत्रिम पैर, हाथ, कैलिपर्स, स्प्लिंट और अन्य उपकरण तैयार
कटिहार से कोलकाता तथा NILD का यह परिभ्रमण मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय यात्रा रही। इस यात्रा से प्राप्त ज्ञान और अनुभव भविष्य में निश्चित रूप से मेरे लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

यात्रा वृतांत

चट्टानों में बसी कला - एलोरा की गुफाएँ

-दुर्गमांगे

सेमिनार का कार्यक्रम खत्म होते ही मैं जल्दी–जल्दी स्टेशन की तरफ चलने लगा। सम्मान समारोह के लिए मुझे औरंगाबाद आना पड़ा था और शाम को ट्रेन पकड़नी थी। मगर कार्यक्रम में विलंब हो गया और मेरी ट्रेन छूट गई। मजबूरन मुझे वापस होटल लौटना पड़ा। मन थोड़ा उदास था, पर अगले दिन मैंने इसे अवसर में बदल दिया। सोचा जब औरंगाबाद में ही हूँ तो यहाँ की प्रसिद्ध एलोरा गुफाएँ क्यों न देख ली जाएँ।

अगले दिन सुबह मैं औरंगाबाद से एलोरा की ओर निकल पड़ा। औरंगाबाद से 30 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में, औरंगाबाद–चालिसगाँव सड़क पर स्थित एलोरा गुफाएँ स्थानीय रूप से वेरुल लेनी के नाम से जानी जाती हैं।

ये गुफाएँ विश्व की सबसे विशाल चट्टानों को काटकर निर्मित मंदिर और मठ–विहार हैं। लगभग 600 से 1000 ईस्वी तक के स्मारकों की अटूट शृंखला वाली ये गुफाएँ प्राचीन भारत की सभ्यता को जीवंत कर देती हैं। यूनेस्को विश्व धरोहर में शामिल एलोरा की गुफाएँ अपने आप में रहस्य की कहानी कहती हैं। यहाँ का वातावरण बहुत सुंदर और शांत था।

एलोरा के सभी स्मारक राष्ट्रकूट राजवंश के काल में बनाए गए थे। इन्हीं के समय में हिंदू और बौद्ध गुफाओं का निर्माण हुआ, जबकि यादव राजवंश ने जैन गुफाओं का निर्माण करवाया। ये गुफाएँ द्रविड़ शैली की वास्तुकला में बनी हैं और इनके शिखर ऊँचे–ऊँचे हैं। दीवारों पर भगवान महावीर के सिंहासन पर बैठे चित्र और 22 तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उकेरी गई हैं।

चट्टानों को काटकर बनाई गई हाथी की मूर्तियाँ इनकी सुंदरता को और बढ़ा देती हैं। एलोरा विभिन्न धर्मों के संगम का अद्भुत उदाहरण है। यहाँ हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म की गुफाएँ एक साथ खड़ी हैं। आश्चर्य की बात ये है कि ये अलग–अलग समय पर बनी थीं, पर आज

भारत की "विविधता में एकता का जीवंत प्रमाण देती हैं। परंतु मन में बार–बार यह विचार आ रहा था कि आखिर क्या कारण था कि बौद्ध भिक्षुओं ने अचानक इन गुफाओं को छोड़ दिया होगा? शायद यहाँ कोई महामारी फैली हो या बाहरी आक्रमणों से बचने के लिए उन्होंने इस स्थान को छोड़कर अन्य जगह पलायन कर लिया हो। उनके बलिदान का प्रमाण ही ये धरोहर है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित है।

हिंदू गुफाएँ – कहानियों का खजाना

एलोरा की हिंदू गुफाएँ कहानियों से भरी हैं। गुफा संख्या 15 को दशावतार गुफा कहते हैं। ये दो मंजिला संरचना विष्णु के दस अवतारों को दर्शाती है। मत्स्य अवतार से लेकर कल्कि अवतार तक, हर अवतार को दीवारों पर इतनी बारीकी से उकेरा गया है कि देखकर दंग रह जाते हैं। दीवारों और खंभों पर देवी–देवताओं, दिव्य प्राणियों और जानवरों की छवियाँ तराशी गई हैं।

मूर्तियों की सुंदरता देखकर मन में सवाल उठता था प्राचीन कारीगरों ने इतने साधारण औजारों से ये कलाकृतियाँ कैसे बना दी होंगी? शायद इन्हें बनाने के लिए देवताओं ने ही धरती पर अवतार लिया होगा, क्योंकि ऐसा अद्भुत निर्माण आज भी मानव के लिए चुनौती है।

जैन गुफाएँ – सादगी की मिसाल

गुफा संख्या 30 से 34 जैन गुफाएँ हैं। ये आकार में छोटी हैं पर उतनी ही सुंदर। जैन धर्म सादगी को महत्व देता है और ये गुफाएँ उसी का प्रमाण हैं। गुफा संख्या 32, जिसे इंद्रसभा कहा जाता है. इसमें कमल की अद्भुत मूर्ति और जैन तीर्थंकरों की जटिल नक्काशी है। यहाँ यक्ष–यक्षिणियों की मूर्तियाँ भी हैं।

इन गुफाओं में अहिंसा, स्वच्छता और आंतरिक शांति के सिद्धांत साफ झलकते हैं। इन रहस्यमयी कलाकृतियों को देखकर विश्वास नहीं होता था कि कलाकारों ने छेनी हथौड़े जैसे साधारण औजारों से कठोर चट्टानों को तराशकर दिव्यता में बदल दिया होगा। सबसे अधिक आश्चर्य कैलाश मंदिर को देखकर हुआ। कारीगरों ने इसे ऊपर से नीचे की तरफ काटकर बनाया है, सामने से नहीं।

आज भी ये तकनीक इंजीनियरों और इतिहासकारों को विस्मित करती है।
यहाँ के संगीतमय स्तंभ भी कमाल के हैं। इन्हें ठोकने पर धातु जैसी ध्वनि निकलती है। इनसे प्राचीन काल की संगीत और तकनीक की जानकारी मिलती है। दिल कह रहा था कि जो बात इस जगह में है वह कहीं भी नहीं है। मन तो कर रहा था कि यहीं पर ठहर जाऊँ, मगर... यह संभव नहीं था।

घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग - शिव की नगरी

एलोरा की गुफाएँ देखकर जब बाहर निकला तो गाइड ने बताया कि यहाँ से सिर्फ 1 किलोमीटर दूर घृष्णेश्वर महादेव मंदिर है, जो 12 ज्योतिर्लिंगों में अंतिम ज्योतिर्लिंग है।

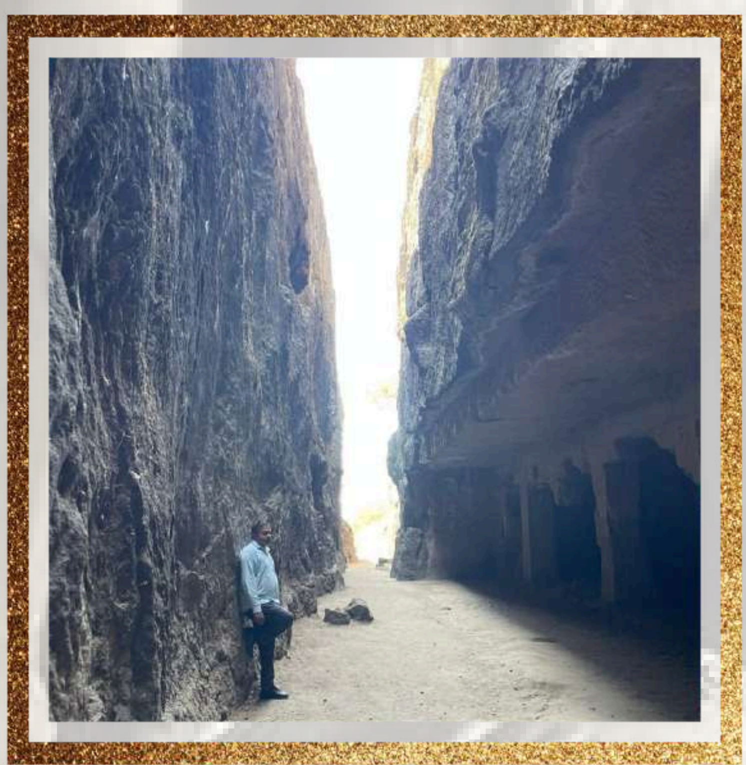

मैंने तुरंत दर्शन का मन बना लिया। मंदिर परिसर में पहुँचते ही घंटियों की ध्वनि और शिव-नाम के जयकारे गूँज रहे थे। मान्यता है कि घृष्णा नाम की भक्त महिला के नाम पर इस मंदिर का नाम पड़ा। कहा जाता है कि उसने अपने बेटे को बचाने के

लिए 101 शिवलिंग बनाकर पूजा की थी। मंदिर का निर्माण अहिल्याबाई होलकर ने करवाया था और इसकी वास्तुकला मराठा शैली की है। गर्भगृह में स्थित शिवलिंग बहुत छोटा है, पर उसमें अद्भुत तेज है। दर्शन करते समय मन को ऐसी शांति मिली जिसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। एलोरा की कलात्मक गुफाओं के बाद घृष्णेश्वर के दर्शन से यात्रा पूर्ण हो गई। लगा जैसे भगवान शिव ने मुझे ट्रेन छूटने का दंड नहीं, बल्कि वरदान दिया हो। जगह-जगह बाजार में बिकने वाली सुर्ख गुलाबी रंग की अंजीर का स्वाद लेता हुआ मैं स्टेशन की तरफ चल दिया।

निष्कर्ष

एलोरा महज गुफाएँ नहीं हैं: ये समय के सफर का प्रतीक हैं। चाहे आप इतिहास, वास्तुकला से आकर्षित हों या केवल खूबसूरत जगहों की सैर का आनंद लेते हों, एलोरा की गुफाएँ आपको मंत्रमुग्ध कर देंगी। ये गुफाएँ महज स्मारक नहीं हैं: ये मानव नवाचार, आस्था और दृढ़ता का प्रमाण हैं।

काव्य रंग

-बिनोद कुमार मंडल

अपनी पहचान बनाने दो

मैं पंछी उड़ने को आतुर
मेरे पर न कतरो अम्मा,
दुनिया देखूँगी मैं उड़कर
पिंजड़े में न जकड़ो अम्मा।

पिंजड़े से बाहर की दुनियाँ
राह हमारी देख रही है,
हम थककर रुक जाएँ कहीं न
इसलिए वो दाना फेंक रही है।

व्यर्थ की तुम चिंता छोड़ो
सोच पुरानी बदल के देखो
पास–पड़ोस के चूजे की भी
माँ–बाबा के अकल को देखो।

सबने मिथक तोड़ दिया है
अपनी जिद्द सब छोड़ दिया है,
उड़ने को आकाश बड़ा है
इसी से पिंजड़ा खोल दिया है।

बात हमारी मानो अम्मा
और कोई मेरी चाह नहीं है।
अपनी पहचान बनाने को माँ
बस यही एक राह सही है।

मेरे ही भले की बात है
अब तो जिद्द न पकड़ो अम्मा,
मैं पंछी उड़ने को आतुर
मेरे पर न कतरो अम्मा।

कर्म

- बेबी अर्चना

कर्म की होती हरदम ही पूजा,
कर्म से मिलता जीवन का मर्म ।
कर्म की कीर्ति चतुर्दिश फैले,
कर्म ही होता जग में श्रेष्ठ धर्म ।।

कर्म आलोकित करता हर पथ,
जीवन बनाता सुखमय समरस।
कर्म की महिमा हर कोई गावे ,
करता जीवन का पथ प्रशस्त ।।

कर्म दूर करे अज्ञान तिमिर,
कर्म ही बहाए शीतल समीर ।
कर्म से होते हर राह रौशन,
कर्म दूर करे अगणित पीर ।।

शूल बिछे राहों में गर तो,
कर्मवीर करते पथ आसान ।
अथक श्रम से ही तो जग में ,
बने हैं कितने वीर महान।।

कर्म सजाए जीवन की बगिया ,
कर्म से खिलते जीवन में फूल ।
कर्म कर ही सब होते सफल ,
इस मर्म को तुम ना जाना भूल।।

ऐसे ही और गद्य को पढ़ने के लिए दिए गए QR कोड कोन स्कैन करें

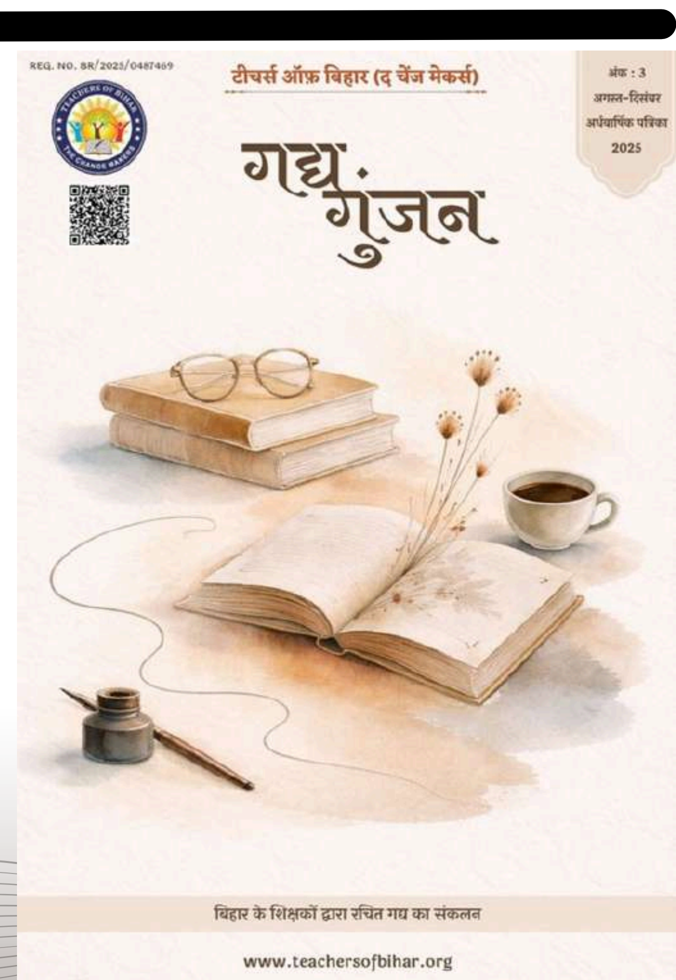

मंदिर जैसा एक विद्यालय पाऊँ

-मधु कुमारी

मंदिर जैसा एक विद्यालय पाऊँ
जिसे उपवन सा मैं सजाऊँ
नन्हें नन्हें महकते फूलों से
उस उपवन की शोभा बढ़ाऊँ....

रोज़ खेलूं कुछ ऐसे रोचक खेल
जिससे हो जाए पल में बच्चों से मेल
नन्हें बचपन का मैं भी हिस्सा बन पाऊँ
फिर से इन मासूमों संग अपना बचपन जी जाऊँ...

जीवन न हो नीरस कभी
कुछ लक्ष्य और ध्येय निभाऊँ
जहां न हो कोई हिंदू-मुसलमान
बस एक अच्छा इंसान बनूं और बनाऊँ....

और इतनी सी है अभिलाषा
जब शिक्षा की हो बात कहीं तो
अपना भी कुछ योगदान पाऊँ
और इस दिखावे की दुनियां में
कर्म कर थोड़ा सम्मान मैं भी पाऊँ...

और न हो कोई राजनीति जहां
बस खुशियां ही खुशियां हो वहां
सच्चाई और ईमानदारी से सजा
एक ऐसा महकता गुलशन सजाऊँ
एक ऐसा जहां बनाऊँ............
एक ऐसा जहां बनाऊँ........|

समर कैंप

-ब्रजेश कुमार वर्मा

समर कैम्प है कमाल का कैम्प,
स्वयंसेवक के बल पर कैम्प।

स्वयंसेवक प्रभाव दिखाएं,
बच्चों का भविष्य बनाएं।

उनसे बच्चों को उम्मीद,
पढ़ने आएं छोड़ के नींद।

बच्चों को बेहतर बनाएं,
स्नेह–प्यार से उन्हें बताएं।

अक्षर, शब्द, अनुच्छेद सिखाएं,
और कहानी की ओर बढ़ाएं।

स्वयंसेवक आधार कैम्प के,
और बच्चे हैं नींव कैम्प के।

कला समेकित शिक्षण करके,
बच्चों का सही चित्रण करके।

स्वयंसेवक गढ़ रहे तस्वीर,
बच्चे दिखा रहे नज़ीर।

अभिनय, गायन, नृत्य के संग,
सीखते–सिखाते जमाते रंग।

एक माह का है ये कैम्प,
बच्चों को है भाया कैम्प।

सुने कहानी खिलकर बच्चे,
दिल के हैं जो अच्छे सच्चे।

प्रयास है बच्चों को पढ़ाएं,
स्वयंसेवक सम्मान बढ़ाएं।

तन–मन एका जब हो जाये,
आत्मज्ञान बुद्धि मिल जाये।

मिल–जुलकर जब सब सीख जायें,
सफल हमारे कैम्प हो जायें।

सब मिलकर यह करें प्रयास,
समर कैम्प बन जाये खास।

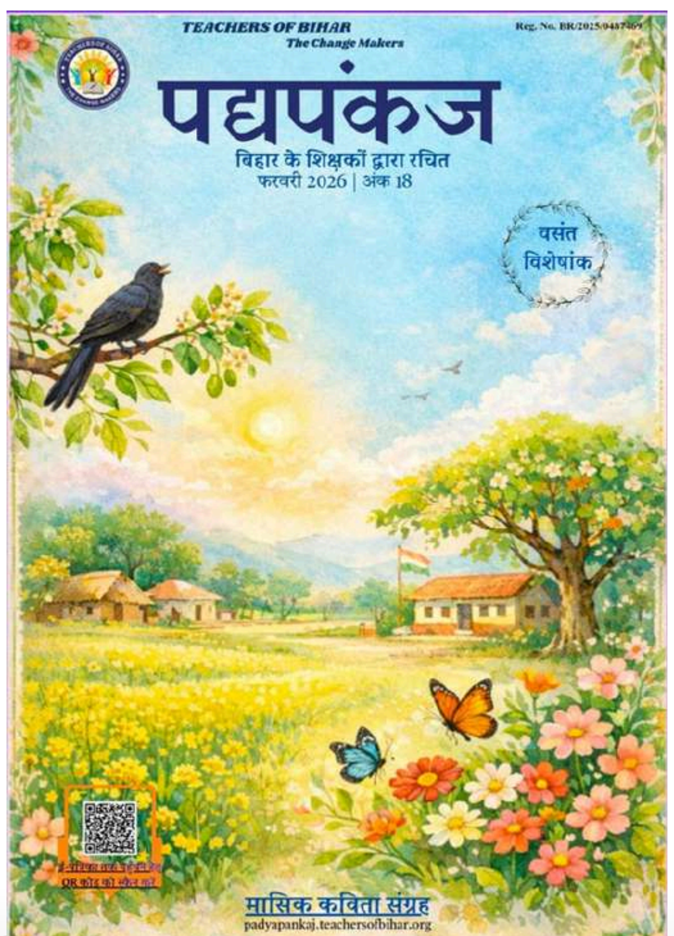

ऐसे ही और पद्य को पढ़ने के लिए दिए QR कोड को स्कैन करें

-राकेश कुमार

योग एवं साधना

योग

साधना

साधना का अर्थ है - लक्ष्य प्राप्ति हेतु निरंतर और एकाग्र प्रयास।

यह मन, वचन और कर्म को अनुशासित बनाती है।

साधना आत्मविश्वास, धैर्य और एकाग्रता को बढ़ाती है।

योग, ध्यान, जप, तप और स्वाध्याय इसके प्रमुख रूप हैं।

नियमित साधना से मानसिक शांति और आत्मिक संतोष प्राप्त होता है।

यह व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

साधना कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

आध्यात्मिक उन्नति और आत्मज्ञान का आधार साधना है।

साधना में निरंतरता, समर्पण और दृढ़ संकल्प आवश्यक हैं।

महान संतों और महापुरुषों की सफलता का मूल मंत्र साधना ही रही है।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

खेल जगत

क्रिकेट की दुनिया से परिचय

-शुभम कुमार

खिलाड़ियों की संख्या (Players Count) कुल खिलाड़ी: प्रत्येक टीम में 11 खिलाड़ी मैदान पर खेलते हैं।

अतिरिक्त खिलाड़ी (Substitutes): मैच की शुरुआत में टॉस से पहले मुख्य 11 खिलाड़ियों के अलावा 4 अतिरिक्त खिलाड़ियों के नाम दिए जाते हैं, जो फील्डिंग में चोटिल खिलाड़ी की जगह ले सकते हैं।

खेल का मैदान और उपकरण (Ground & Equipment) पिच की लंबाई: मुख्य विकेटों के बीच की दूरी 22 गज (22 yards) होती है। अंपायर (Umpires): मैदान पर सही निर्णय लेने के लिए 2 मुख्य अंपायर होते हैं। इसके अलावा सटीक फैसलों के लिए एक तीसरा अंपायर (3rd Umpire) और मैच की निगरानी के लिए मैच रेफरी होता है।

खेल के बुनियादी नियम (Basic Rules)
टॉस (Toss): मैच की शुरुआत सिक्के के उछाल से होती है। टॉस जीतने वाला कप्तान पहले बल्लेबाजी (Batting) या गेंदबाजी (Bowling) चुनता है। ओवर (Over): एक ओवर में 6 वैध गेंदें (Valid Balls) फेंकी जाती हैं। रन बनाना (Scoring Runs): बल्लेबाज विकेटों के बीच दौड़कर रन बनाते हैं। यदि गेंद जमीन को छूकर सीमा रेखा (Boundary) पार करे तो 4 रन और बिना जमीन छुए सीधे पार करे तो 6 रन मिलते हैं।

आउट होने के मुख्य तरीके :आधिकारिक तौर पर क्रिकेट में आउट होने के कई तरीके हैं, जिनमें से 5 सबसे मुख्य हैं: बोल्ड : गेंदबाज की गेंद सीधे स्टंप्स पर लग जाए और गिल्लियां गिर जाएं। कैच : बल्लेबाज के बल्ले से लगी गेंद जमीन को छूने से पहले फील्डर द्वारा पकड़ ली जाए। एलबीडब्ल्यू (LBW): गेंद बल्ले पर लगने से पहले बल्लेबाज के पैर (पैड) पर लगे, जो सीधे स्टंप्स पर जा रही हो। रन आउट: बल्लेबाज के क्रीज में पहुँचने से पहले फील्डर गेंद मारकर गिल्लियां गिरा दे। स्टंप: शॉट खेलने के प्रयास में बल्लेबाज क्रीज से बाहर हो और विकेटकीपर गिल्लियां बिखेर दे।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

प्रेरक प्रसंग

समय का मोल

-सोनी वर्षा

एक समय की बात है, रामपुर नामक एक सुरम्य गांव में एक साधारण से किसान का परिवार रहता था। किसान स्वभाव से अत्यंत परिश्रम और ईमानदार था, परंतु उसका पुत्र रमेश स्वभाव से बिल्कुल इसके विपरीत था। रमेश बहुत ही आलसी था। उसके जीवन का एक ही नियम था- हर काम को कल पर छोड़ देना। विद्यालय में शिक्षकों द्वारा समझाया गया कोई भी पाठ उसे समझ नहीं आता था, क्योंकि उसका ध्यान कभी पढ़ाई पर होता ही नहीं था। वह दिन भर मोबाइल में गेम खेलने और व्यर्थ की रील देखने में व्यस्त रहता था। गृह कार्य करने में भी उसका मन कभी नहीं लगता था।

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।"

एक दिन बेटे की इस दुर्दशा को देखकर चिंतित पिता ने प्यार से समझाते हुए कहा, "रमेश, तुम्हें समय की कीमत समझनी चाहिए। तुम्हें आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। मोबाइल में दिन भर गेम खेलकर और फालतू रील देखकर अपना कीमती समय बर्बाद करना बुद्धिमानी नहीं है। यह सब समय की बर्बादी के अलावा और कुछ नहीं है।" परंतु रमेश के सिर पर तो आलस्य का भूत सवार था, उसने अपने पिता की एक भी बात पर ध्यान नहीं दिया।

देखते ही देखते समय बीत गया और बोर्ड की परीक्षा रमेश के सिर पर आ गई। परीक्षा का नाम सुनकर भी रमेश के व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया। वह अब भी पढ़ाई पर ध्यान देने के बजाय यही कहता, "कोई बात नहीं पिताजी, में इस पाठ को कल पढ़ लूंगा।" वह अपनी पुरानी आदत के अनुसार हर काम को टालता रहा।

परिणामस्वरूप, जब परीक्षा के दिन रमेश परीक्षा कक्ष में बैठा, तो उसके सामने रखा प्रश्न पत्र उसे किसी पहेली की तरह लग रहा था। उसे प्रश्न पत्र में दिए गए किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं आ रहा था। नतीजा वही हुआ जिसका डर था-रमेश बोर्ड की परीक्षा में अनुत्तीर्ण (फेल) हो गया।

बोर्ड की परीक्षा में फेल होने के कारण पूरे गांव और विद्यालय में उसकी जगहंसाई होने लगी। उसके सभी साथी उसका मजाक उड़ाने लगे। रमेश काफी दुखी और उदास रहने लगा। उसके दोस्त जब भी उसे देखते, उसका उपहास उड़ाते हुए कहते, "क्यों रमेश! तू तो आज का काम कल पर छोड़ देता था, फिर तू पास कैसे होगा?"

दोस्तों की ये कड़वी बातें सुनकर रमेश का हृदय ग्लानि से भर गया। एक दिन वह बेहद उदास होकर गांव के एक पुराने पेड़ के नीचे जा बैठा। वह शून्य में ताकते हुए सोचने लगा, "मैं क्या करूं? अब तो मेरे सारे दोस्त मेरा मजाक उड़ाते हैं, और मेरे माता-पिता भी मेरे इस आलसी स्वभाव के कारण अत्यंत दुखी रहते हैं।"

तभी उसी गांव के एक आदर्श शिक्षक, श्री रामप्रवेश जी वहां से गुजर रहे थे। रमेश को इस तरह रोआंसा और परेशान देखकर वे उसके समीप आए और स्नेहपूर्वक बोले, "क्या बात है रमेश? तुम इतने दुखी और परेशान क्यों दिखाई दे रहे हो?"

रमेश ने रुंधे हुए गले से अपने गुरु जी को अपनी सारी व्यथा और परीक्षा के परिणाम के बारे में बताया। मास्टर जी ने मुस्कुराते हुए रमेश के सिर पर हाथ रखा और कहा, "रमेश, घबराने की कोई बात नहीं है। हमारे बुजुर्ग कह गए हैं- जब जागो तभी सवेरा। तुम्हारे भीतर आलस्य का एक कीड़ा समाया हुआ था, जिसे बाहर निकालना बेहद जरूरी था। अब समय आ गया है कि तुम कोई भी कार्य आज का कल पर टालने का विचार पूरी तरह से त्याग दो। समय से उठना, समय से पढ़ना और समय से हर कार्य को अनुशासित होकर करना प्रारंभ कर दो। तुम्हें समय की कीमत समझनी होगी, क्योंकि समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। यदि तुम आज से ही ऐसा करोगे, तो निश्चित ही अगली बार तुम विद्यालय में प्रथम स्थान पाओगे।"

गुरु जी के इन आत्मियता से भरे शब्दों ने रमेश के भीतर एक नई ऊर्जा का संचार किया। उसने मन ही मन कहा, "मेरे गुरु जी बिल्कुल सही कह रहे हैं।" उसी दिन से रमेश ने अपनी कमियों को दूर करने का संकल्प लिया और कठिन परिश्रम करना प्रारंभ कर दिया। अब वह किसी भी कार्य को तुरंत कर लेता, कल के भरोसे कभी नहीं छोड़ता। वह पढ़ाई के साथ-साथ घर के कार्यों में भी अपने माता-पिता की मदद करने लगा। सबसे बड़ा बदलाव उसने यह किया कि मोबाइल फोन को अपने जीवन से पूरी तरह से त्याग दिया। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह अब मोबाइल पर रील देखकर या गेम खेलकर अपना अमूल्य समय नष्ट नहीं करेगा।

नतीजा यह हुआ कि एक वर्ष बाद जब दोबारा बोर्ड की परीक्षा हुई, तो रमेश ने पूरे विद्यालय में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होकर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उसकी इस सफलता को देखकर माता-पिता की आंखों में हर्ष के आंसू आ गए और जो दोस्त उसका मजाक उड़ाते थे, वे आज उसकी प्रशंसा कर रहे थे। तब रमेश को सच्चे अर्थों में यह एहसास हुआ कि समय बहुत बलवान है।

इस प्रसंग से शिक्षा

हमें इस कहानी से यह अमूल्य शिक्षा मिलती है कि समय की कीमत को पहचानना ही जीवन की सबसे बड़ी बुद्धिमानी है। हमें कभी भी कल के भरोसे नहीं रहने चाहिए, क्योंकि बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। आज का काम आज ही और इसी वक्त कर लेना चाहिए, तभी जीवन में सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

ज्ञान की पोटली

-मुकेश कुमार शर्मा

रोचक तथ्य

शून्य (0) का सफर

भारत के महान गणितज्ञ आर्यभट्ट ने दुनिया को शून्य दिया, लेकिन क्या आप जानते हैं कि रोमनों के पास शून्य को लिखने के लिए कोई रोमन अंक (Roman Numeral) नहीं था? वे इसके लिए लैटिन शब्द 'Nulla' (कुछ नहीं) का इस्तेमाल करते थे।

पेड़ों का नेटवर्क

पेड़ आपस में बात करते हैं! वैज्ञानिकों के अनुसार, जंगलों में पेड़ों की जड़ें जमीन के नीचे फंगस (कवक) के एक नेटवर्क से जुड़ी होती हैं, जिससे वे एक-दूसरे को पोषण और खतरों की चेतावनी भेजते हैं। इसे "Wood Wide Web" कहा जाता है।

अंतरिक्ष की शांति

अंतरिक्ष (Space) में कोई आवाज नहीं होती क्योंकि वहां कोई वायुमंडल नहीं है। ध्वनि तरंगों को यात्रा करने के लिए किसी माध्यम (जैसे हवा या पानी) की जरूरत होती है। इसलिए वहां कितना भी बड़ा विस्फोट हो जाए, हमेशा सन्नाटा ही रहेगा।

अधिक जानकारी के लिए दिए गए QR कोड कोन स्कैन करें

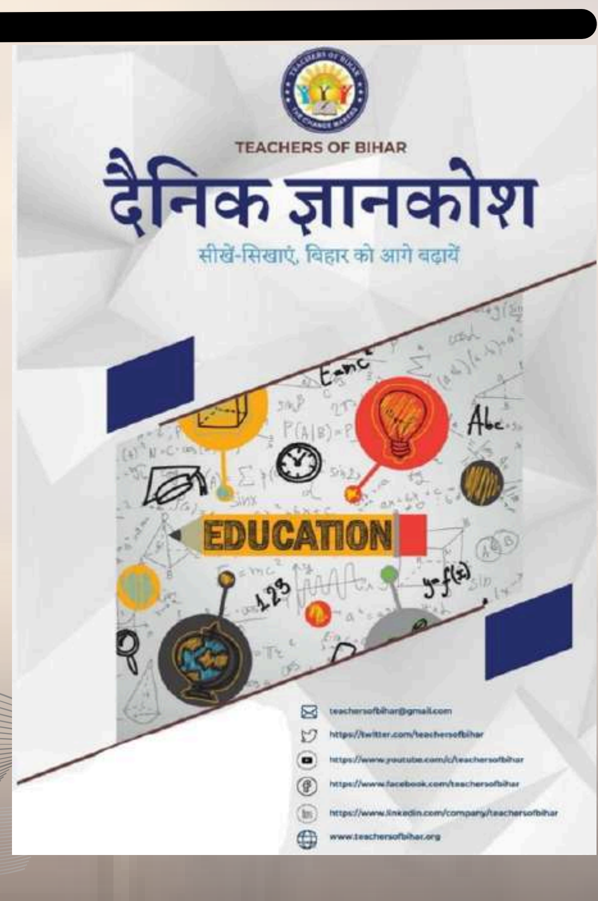

दिमागी कसरत

दिमाग की बत्ती जलाओ

तार्किक पहेली

एक मेज पर एक टोकरी में 6 सेब हैं। क्लास के 6 बच्चों को एक-एक सेब इस तरह देना है कि हर बच्चे को एक सेब मिल जाए और टोकरी में भी एक सेब बचा रहे। यह कैसे संभव है?

उत्तर: पहले 5 बच्चों को एक-एक सेब दे दीजिए। छठे बच्चे को सेब टोकरी समेत दे दीजिए! इससे उसे सेब भी मिल जाएगा और आखिरी सेब टोकरी में ही रहेगा.

संख्याओं का खेल

यदि नीचे दिए गए पैटर्न को ध्यान से देखें, तो प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा?

2+3=10

7+2=63

6+5=66

8+4=?

लॉजिक: दोनों संख्याओं को जोड़कर, पहली संख्या से गुणा किया गया है। जैसे: (2+3)* 2 = 10; (7 + 2) * 7 = 63

Word of the edition

"शब्द: Erudite (एड्युडाइट)

अर्थ: विद्वान, ज्ञानवान, बहुत पढ़ा-लिखा (Showing profound knowledge)."

"वाक्य में प्रयोग: "हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर नियमित पढ़ना किसी भी छात्र को Erudite (विद्वान) बना सकता है।""

Thought for morning assembly

शिक्षकों के लिए नोट: इन्हें सुबह की प्रार्थना सभा (Morning Assembly) में ब्लैकबोर्ड पर लिखने या छात्रों को प्रेरित करने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

प्रथम दिन का विचार (प्रेरणा):
"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।"- नेल्सन मंडेला
भावार्थ: पढ़ाई सिर्फ परीक्षा पास करने के लिए नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का जरिया है।

द्वितीय दिन का विचार (अनुशासन):
"ज्ञान में किया गया निवेश सबसे अच्छा ब्याज देता है।" बेंजामिन फ्रैंकलिन
भावार्थ: आज आप जो समय और मेहनत अपनी पढ़ाई में लगा रहे हैं, वह भविष्य में आपके जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति बनेगी।

तृतीय दिन का विचार (धैर्य और प्रयास):
"सफलता की कुंजी यह नहीं है कि हम कभी असफल न हों, बल्कि यह है कि हम हर बार गिरकर फिर से उठ खड़े
हों।" - स्वामी विवेकानंद
भावार्थ: गलतियों और असफलताओं से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उनसे सीखकर आगे बढ़ना ही सच्ची सीख है।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

हैक्स व ट्रिक्स

5 से अंत होने वाली संख्या का वर्ग (Square) निकालना (सिर्फ 3 सेकंड में)

जब किसी संख्या के अंत में 5 हो (जैसे 25, 45, 65, 85), तो उसका वर्ग पलक झपकते ही निकालें:

उदाहरण: 65 * 65 का मान निकालें।

स्टेप 1: उत्तर के अंत में हमेशा 25 लिख दें।

स्टेप 2: दहाई के अंक (यहाँ 6 है) को उसकी अगली संख्या (7) से गुणा करें: 67 = 421

उत्तर: दोनों को साथ लिख दें 4225! (इसी तरह 85 85 7225 होगा, क्योंकि 89 = 72)

पोमोडोरो तकनीक' (Pomodoro Technique)

लगातार घंटों पढ़ने से दिमाग थक जाता है और पढ़ा हुआ याद नहीं रहता। इसके लिए इस तरीके को अपनाएं:

25 मिनट: पूरी एकाग्रता के साथ पढ़ें (बिना मोबाइल या किसी भटकाव के)।

5 मिनट: छोटा ब्रेक लें (स्ट्रेचिंग करें, गहरी सांस लें या पानी पिएं)।

इस चक्र (Cycle) को 4 बार दोहराने के बाद एक 20-30 मिनट का लंबा ब्रेक लें।

फायदा: इससे आपका फोकस बना रहता है और चीजें लंबे समय तक याद रहती हैं।

खंड: 2 अंक:2
अप्रैल–जून 2026
त्रैमासिक ई–शैक्षिक पत्रिका

आगामी कैलेंडर

-नेहा कुमारी

जुलाई

1 राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस:-
हम बच्चों को चिकित्सा पेशे में लगे सभी डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों जो मरीज़ों के जीवन को बचाने के लिए निस्वार्थ भाव से काम करते हैं के बारे सम्मान भावना जगाते हैं।

11 विश्व जनसंख्या दिवस:-
हम बच्चों को बढ़ती आबादी से जुड़ी गंभीर समस्याओं के समाधान के प्रति जागरुक कर सकते है।

22 तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया-
1947 को ही भारत की संविधान सभा ने तिरंगे को आधिकारिक तौर पर स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रुप में अपनाया था।

26 कारगिल दिवस :-
भारत की जीत और भारतीय सेना के अदम्य साहस को सम्मानित करने और वीरों को श्रद्धांजलि देने का ख़ास दिन है।

अगस्त

6 हिरोशिमा दिवस:-
6 अगस्त 1945 को हिरोशिमा (जापान) पर गिराए गए परमाणु बम की त्रासदी के पीड़ितों को याद करना और दुनिया में शांति व परमाणु निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देना है।

8 भारत छोड़ो आंदोलन दिवस:-
8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी ने मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान से अंग्रेज़ों के खिलाफ ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो' आंदोलन की शुरुआत की थी और 'करो या मरो' का नारा दिया था।

12 अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस:-
युवाओं से जुड़ी वैश्विक समस्याओं (जैसे शिक्षा, रोज़गार, और स्वास्थ्य) पर ध्यान केंद्रित करना और सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विकास में युवाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना है।

15 स्वतंत्रता दिवस:-
15 अगस्त 1947 को ब्रिटश हुकूमत से स्वतंत्रता मिलने के उपरांत उसकी याद में स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है।

सितंबर

5 **शिक्षक दिवस:-**
देश के दूसरे राष्ट्रपति, महान दार्शनिक और शिक्षाविद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस (5 सितंबर 1888) के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

8 **अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस:-**
श्री शिक्षायातन महाविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस वर्ष 2009 से मनाया जा रहा है।

14 **हिंदी दिवस:-**
1949 को भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को देश की राजभाषा के रूप में अपनाया था।

29 **विश्व हृदय दिवस:-**
लोगों को हृदय रोगों और उनके बचाव के उपायों के बारे में जागरुक करना है।

यदि आप भी इन अवसरों पर अपने विद्यालय में छात्रों के साथ मिलकर कोई रोचक गतिविधि, प्रतियोगिता या कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं, तो हमें आपकी तस्वीरों का इंतज़ार है! अपनी इन खूबसूरत और रचनात्मक गतिविधियों की तस्वीरों को हमारे साथ साझा करने के लिए नीचे दिए गए स्कैनर (QR Code) को स्कैन करें। चुनिंदा तस्वीरों को मैगजीन के अगले अंक में विशेष रूप से प्रकाशित किया जाएगा।
तो देर किस बात की? अपनी प्रतिभा और प्रयासों को हमारे साथ मंच दीजिए!

अग्रिम अंक में महत्वपूर्ण दिवसों से संबंधित तस्वीरें साझा करने हेतु दिया गया कर कोड स्कैन करें

लिंक:– HTTPS://FORMS.GLE/EQZPP9B7JSJBWHHV6

सुर्खियां

- मृत्युंजय कुमार

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
स्वतंत्र प्रभात
जो लिखेगा, वही टिकेगा

भारतीय भाषाओं के प्रति जागरूकता लाने के लिए 'टीचर्स ऑफ बिहार' की बड़ी पहल

- भारतीय भाषा समर कैंप एक्सक्लूसिव ऑनलाइन क्विज का सफल आयोजन

ऑनलाइन क्विज में दिखा जबरदस्त उत्साह

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पटना। शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव के लिए समर्पित मंच 'टीचर्स ऑफ बिहार' द्वारा आयोजित 'भारतीय भाषा समर कैंप: एक्सक्लूसिव ऑनलाइन क्विज 2026' का सफलतापूर्वक समापन हो गया। इस कार्यक्रम ने डिजिटल शिक्षा और भाषाई गौरव के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

प्रमुख सुर्खियां

4500 से अधिक प्रतिभागियों को प्रदान किए गए डिजिटल सर्टिफिकेट।

बिहार सहित विभिन्न राज्यों के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक लिया भाग।

भारतीय भाषाओं के संवर्धन और रचनात्मक शिक्षा पर रहा विशेष जोर।

संस्थापक एवं तकनीकी टीम का विजन

समूह के संस्थापक शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से इस आयोजन की सफलता पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने कहा, 'हमारा उद्देश्य तकनीक के माध्यम से शिक्षा को हर घर तक पहुँचाना है। इस क्विज के माध्यम से हमने न केवल भारतीय भाषाओं की समृद्धि को प्रदर्शित किया, बल्कि यह भी साबित किया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म का सही उपयोग शैक्षणिक क्रांति ला सकता है।'

मीडिया और क्विज निर्माण की भूमिका

प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं क्विज क्रिएटर-सह-प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कार्यक्रम के व्यापक प्रभाव पर चर्चा करते हुए कहा, 'इस आयोजन ने बिहार ही नहीं, बल्कि अन्य राज्यों के हजारों शिक्षकों, विद्यार्थियों और शिक्षा प्रेमियों को एक सूत्र में पिरोया है। हमारा लक्ष्य भारतीय भाषाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना और शिक्षा को मनोरंजक एवं रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ना था,

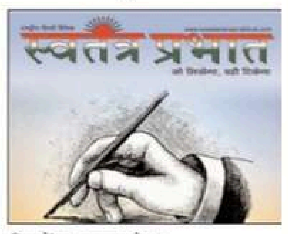

जिसमें हम सफल रहे।'

सहभागिता और भविष्य की रूपरेखा

इवेंट लीडर केशव कुमार ने आयोजन के आंकड़ों की जानकारी देते हुए बताया, 'इस समर कैंप क्विज में साढ़े चार हजार से अधिक प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और सफलतापूर्वक प्रमाण-पत्र प्राप्त किए। यह 'टीचर्स ऑफ बिहार' की टीम के अथक प्रयास और शिक्षा के प्रति उनके संकल्प का परिणाम है। शिक्षा, नवाचार, सहयोग और सकारात्मक बदलाव' के मूल मंत्र के साथ 'टीचर्स ऑफ बिहार' लगातार शिक्षकों के सम्मान और शिक्षा के उत्थान के लिए कार्यरत है। टीम ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजनों से जुड़ने की अपील की है।

हर खबर पर पैनी नजर
नई सोच एक्सप्रेस
(बिहार और झारखंड से प्रकाशित हिन्दी दैनिक)
पेज : 12
टी20 विश्वकप में सैमसन को शायद ही अवसर..
www.naisochlive.com | पटना, गुरुवार, 25 जून 2026, वर्ष- 09, अंक - 121, पृष्ठ-12, मूल्य - 3:00 | naisochexpress@gmail.com

इंस्पायर अवॉर्ड–मानक 2025 में देश में प्रथम आने पर मुजफ्फरपुर में सम्मान समारोह

नई सोच एक्सप्रेस

मुजफ्फरपुर। इंस्पायर अवॉर्ड–मानक 2025 में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने की उपलब्धि पर बुधवार को डायट रामबाग में सम्मान समारोह सह डिब्रीफिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (एसएसए एवं ईई) सुजीत कुमार दास और डायट की प्रभारी प्राचार्या डॉ. सरिता शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर इंस्पायर अवॉर्ड कार्यक्रम में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों, तकनीकी टीम के सदस्यों और सहयोगी कर्मियों को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने कहा कि यह उपलब्धि शिक्षकों, विद्यार्थियों और शिक्षा विभाग के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। डिब्रीफिंग सत्र में

कार्यक्रम की समीक्षा की गई तथा भविष्य में बेहतर प्रदर्शन के लिए रणनीतियों पर चर्चा हुई। जिला कार्यक्रम पदाधिकारी सुजीत कुमार दास ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान हासिल करना पूरे मुजफ्फरपुर और बिहार के लिए गर्व की बात है। उन्होंने इस सफलता का श्रेय शिक्षकों, विद्यार्थियों और शिक्षा विभाग के समन्वित प्रयासों को दिया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक, प्रखंड स्तरीय नोडल शिक्षक, तकनीकी टीम के सदस्य एवं शिक्षा विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। अंत में सभी प्रतिभागियों ने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

स्कूल–कालेजों के पाठ्यक्रम में शामिल होगा योग : सम्राट

12वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर मुख्यमंत्री ने की घोषणा

करें योग, रहें निरोग

- सम्राट चौधरी ने कहा-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से योग को मिली वैश्विक पहचान
- शिविर में उप मुख्यमंत्री विजय कुमार चौधरी, स्वास्थ्य मंत्री निशांत भी हुए शामिल

जागरण संवाददाता, पटना: कंकड़बाग स्थित पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स परिसर में रविवार को 12वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि योगाभ्यास को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अगले वर्ष से प्रदेश के विद्यालयों और कालेजों के पाठ्यक्रम में इसे शामिल किया जाएगा। बगैर कोई खर्च के योगाभ्यास स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन के लिए सबसे सरल और सटीक है। योग स्वस्थ एवं समृद्ध भारत का रास्ता खोलेगा। योग भारत की प्राचीन एवं अमूल्य सांस्कृतिक विरासत है। यह स्वस्थ शरीर, शांत मन और संतुलित जीवन का आधार है। अपनी दिनचर्या में योगाभ्यास को शामिल करें। इससे जीवन स्वस्थ और दीर्घायु होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से योग को वैश्विक पहचान मिली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि योग केवल एक व्यायाम पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र शैली है। योगाभ्यास से स्वस्थ और संतुलित जीवनशैली की प्रेरणा मिलती है। योग को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं तो बेहतर है। नियमित योगाभ्यास से शारीरिक

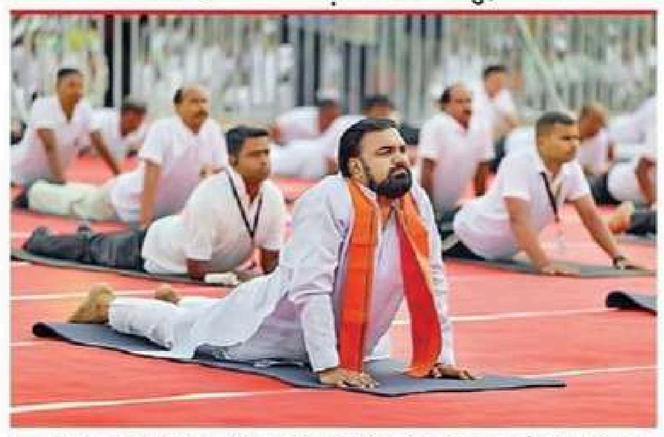

पटना के कंकड़बाग स्थित पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स परिसर में 12वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास करते मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी व अन्य। • एएनआइ

एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है तथा व्यक्ति तनावमुक्त एवं ऊर्जावान जीवन जी सकता है। उन्होंने कहा कि मैं प्रतिदिन टहलने के साथ योगाभ्यास करता हूं।

लोगों को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिवर्ष स्वास्थ्य विभाग के तहत बिहार का एक बड़ा बजट खर्च किया जाता है। बिहार सरकार राज्य में खेल, स्वास्थ्य एवं युवा कल्याण को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। योग शिविर में उप मुख्यमंत्री विजय कुमार चौधरी, केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह व रामनाथ ठाकुर, स्वास्थ्य मंत्री निशांत, पूर्व मंत्री मंगल पांडेय, मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, डीजीपी विनय कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव लोकेश कुमार सिंह, स्वास्थ्य विभाग के सचिव कुमार रवि समेत विभिन्न विभागों के पदाधिकारी आदि मौजूद रहे।

बेगूसराय का स्कूल बिहार में अव्वल

पटना (आशिप्र)। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित स्वच्छ एवं हरित विद्यालय रेटिंग 2025–26 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए ग्रामीण श्रेणी–एक (प्राथमिक–उच्च प्राथमिक) में बेगूसराय जिले के मध्य विद्यालय मोहनपुर ने राष्ट्रीय स्तर पर 27वां एवं बिहार में पहला स्थान प्राप्त किया है। इस श्रेणी में बिहार से चयनित विद्यालयों में

मध्य विद्यालय मोहनपुर ने प्रथम स्थान हासिल कर जिला एवं राज्य का गौरव बढ़ाया है।

स्वच्छ एवं हरित विद्यालय रेटिंग में शिक्षा मंत्रालय की एक राष्ट्रीय पहल है, जिसका उद्देश्य विद्यालयों में स्वच्छता, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास की संस्कृति को बढ़ावा देना है। विद्यालयों का मूल्यांकन छह प्रमुख मापदंडों—जल, शौचालय, साबुन से हाथ धोना, संचालन एवं रखरखाव, व्यवहार परिवर्तन एवं क्षमता निर्माण तथा मिशन लाइफ गतिविधियों के आधार पर किया जाता है। इस रेटिंग प्रक्रिया के अंतर्गत विद्यालयों द्वारा ऑनलाइन पोर्टल पर विभिन्न गतिविधियों, उपलब्धियों एवं आधारभूत संरचनाओं से संबंधित विवरण और प्रमाण अपलोड किए जाते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों को सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट प्रदान किया जाता है। मध्य विद्यालय मोहनपुर की यह उपलब्धि विद्यालय में स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, छात्र सहभागिता तथा सामुदायिक सहयोग के क्षेत्र में किये गये निरंतर प्रयासों का परिणाम है। विद्यालय ने स्वच्छता,

मध्य विद्यालय, मोहनपुर का राष्ट्रीय स्तर पर 27वां स्थान

जल संरक्षण, हरित परिसर निर्माण, पौधारोपण, हाथ धुलाई की आदतों के विकास तथा मिशन लाइफ गतिविधियों के सफल क्रियान्वयन में उल्लेखनीय कार्य किया है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान विद्यालय परिवार, विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय शिक्षा समिति तथा स्थानीय समुदाय के सामूहिक प्रयासों का प्रतिफल है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि भविष्य में और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करेगी।

विद्यालय परिवार ने इस उपलब्धि के लिए शिक्षा विभाग, जिला प्रशासन, अभिभावकों एवं स्थानीय समुदाय के प्रति आभार व्यक्त किया है तथा विद्यालय को उत्कृष्टता के नए आयामों तक पहुँचाने का संकल्प दोहराया है।

समर कैंप. प्राथमिक शिक्षा निदेशक विक्रम विरकर ने कैंपों का निरीक्षण कर कहा

यह शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं, सीखने का जन आंदोलन है

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

बिहार शिक्षा विभाग द्वारा राज्यभर में संचालित 82 हजार समर कैंपों के माध्यम से 12 लाख से अधिक बच्चों को सीखने, पढ़ने और रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने का व्यापक अभियान चलाया जा रहा है. इस क्रम में प्राथमिक शिक्षा निदेशक विक्रम विरकर ने सोमवार पटना स्थित बालक मध्य विद्यालय, पुनाइचक, कन्या मध्य विद्यालय, पुनाइचक एवं नवीन पार्क मध्य विद्यालय, राजवंशी नगर का भ्रमण किया. इस दौरान शिक्षा निदेशक ने कहा कि बिहार में संचालित समर कैंप केवल एक शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि बच्चों की सीखने की निरंतरता बनाये रखने का एक जन-अभियान बन चुका है.

अपने अनुभव बच्चों से किये साझा

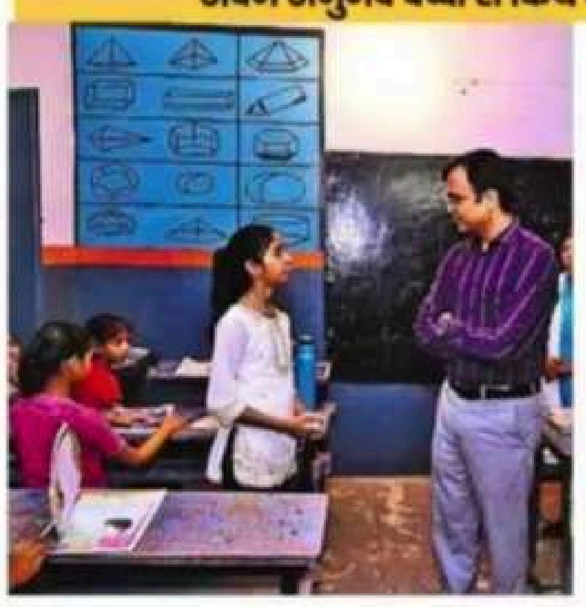

शिक्षा निदेशक ने बच्चों के साथ गणित की गतिविधि 'संख्या चक्र' का संचालन किया. उन्होंने बच्चों के साथ न सिर्फ कहानियां सुनीं, बल्कि कहानी के पात्रों व घटनाओं पर खुलकर चर्चा की और बच्चों को अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रेरित किया. निदेशक ने कहा कि 12 लाख से अधिक बच्चों तक पहुंचने वाला यह अभियान शिक्षा विभाग, विद्यालयों, तालीमी मरकज, टोला सेवकों, स्वयंसेवकों एवं समुदाय के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है. इस अवसर पर पटना जिला शिक्षा पदाधिकारी साकेत रंजन, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी कृतिका वर्मा, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के राज्य समन्वयक मो नैयर आलम, कार्यक्रम समन्वयक दीनानाथ कुमार सिन्हा, सरोज कुमार झा एवं गीता देवी उपस्थित रहे.

बच्चों के बीच बने शिक्षक, खेला 'संख्या चक्र'

राज्य में शिक्षा के स्तर को सुधारने और बच्चों को रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने के लिए चलाए जा रहे "समर कैंप" के सकारात्मक परिणाम दिखने लगे हैं. राज्य के विभिन्न जिलों में संचालित 82 हजार समर कैंपों के माध्यम से 12 लाख से अधिक बच्चे पठन-लेखन, गणित, कला, खेल और संवाद आधारित गतिविधियों का लाभ उठा रहे हैं. इसी क्रम में, समर कैंप का जायजा लेने पहुंचे शिक्षा निदेशक एक अनूठे अंदाज में नजर आये. वे औचक निरीक्षण के दौरान अधिकारियों का प्रोटोकॉल छोड़ बच्चों के बीच खुद शिक्षक की भूमिका में नजर आये. इस दौरान उन्होंने बच्चों के साथ कहानियां सुनीं, कहानी के पात्रों एवं घटनाओं पर चर्चा की तथा उन्हें अपने विचार और अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया.

शिक्षा विभाग • हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान की जानकारी देने के लिए 6 संस्थाओं से समझौता

सरकारी स्कूलों के बच्चों को शब्दों का स्पष्ट उच्चारण सिखाया जाएगा

पॉलिटिकल रिपोर्टर | पटना

बिहार में सरकारी स्कूलों के छात्रों को हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान की सही जानकारी दी जाएगी। साथ ही शब्दों के स्पष्ट उच्चारण, उसके अर्थ, सही जगह पर इस्तेमाल के बारे में बताया जाएगा। इसके लिए 2 जुलाई को शिक्षा विभाग और 6 संस्थाओं के बीच एमओयू होगा। ये संस्थान राज्य के छात्रों को निःशुल्क पढ़ाएंगे और समझाएंगे। शब्दों के सही प्रयोग के बारे में बताएंगे। शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी ने कहा कि इससे छात्रों का आधार मजबूत होने के साथ ही तकनीकी माध्यम से विषय की जानकारी मिलेगी। ये संस्थान बच्चों की पढ़ाई में कमजोरियों की पहचान के साथ-साथ उनके नियमित अभ्यास पर फोकस करेंगे। शिक्षकों की सहायता और विद्यालयों की समीक्षा व्यवस्था को भी मजबूत करेंगे। सभी साझेदार आईसीटी लैब और स्मार्ट क्लास का बेहतर उपयोग करने में भी मदद करेंगे।

छह संस्थान अलग-अलग काम करेंगे

1. एकस्टेप फाउंडेशन - कक्षा 2 से 8 तक के बच्चों को हिन्दी, अंग्रेजी और गणित में डिजिटल अभ्यास कराएगा। यह कार्य पहले उन विद्यालयों में शुरू होगा, जहां आईसीटी या कम्प्यूटर लैब उपलब्ध हैं।
2. लैसवपवानी एआई - कक्षा 2 से 5 तक के बच्चों की पढ़ने की क्षमता जांचेगा। इससे पढ़ने में कमजोर बच्चों की पहचान जल्द हो सकेगी।
3. खान एकेडमी इंडिया - कक्षा 6 से 10वीं तक के बच्चों को गणित और विज्ञान की पढ़ाई की जानकारी देगा।
4. पाईजैम फाउंडेशन - कक्षा 1 से 9वीं तक के बच्चों में डिजिटल कौशल, एआई की बुनियादी समझ, कोडिंग और समस्या समाधान की क्षमता विकसित करेगा।
5. मंत्रा फॉर चेंज - विद्यालय सुधार, मेंटरिंग और समीक्षा व्यवस्था को मजबूत करने में मदद करेगी। मॉडल स्कूल यानी सरस्वती विद्या निकेतन में भी संस्था काम करेगी।
6. प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन - कक्षा 4, 5 और 6 के बच्चों की भाषा व गणित की बुनियादी सीख को मजबूती प्रदान करेगा। पढ़ाई में पीछे रहने वाले बच्चों को विशेष सहायता मिलेगी।

हर खबर पर पैनी नजर
नई सोच एक्सप्रेस
(बिहार और झारखंड से प्रकाशित हिन्दी दैनिक)
पेज : 08
सूर्यकुमार की जगह श्रेयस अय्यर को कप्तान...
www.naisochlive.com | पटना, शनिवार, 09 मई 2026, वर्ष- 09, अंक- 74, पृष्ठ-12, मूल्य - 3:00 | naisochexpress@gmail.com

'टीचर्स ऑफ बिहार' बना शिक्षकों का बड़ा मंच, तकनीक और नवाचार से शिक्षा को दे रहा नई दिशा

नई सोच एक्सप्रेस

पटना। बिहार की शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक बदलाव और शिक्षकों के कौशल विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'टीचर्स ऑफ बिहार' एक सशक्त मंच के रूप में उभरकर सामने आया है। यह मंच वर्तमान में प्रदेश की बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के रूप में कार्य कर रहा है, जहां हजारों शिक्षक तकनीक और नवाचार के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़कर सीख रहे हैं। संस्था के संस्थापक शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने बताया कि संगठन का उद्देश्य बिहार के शिक्षकों को डिजिटल युग की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। उन्होंने कहा कि 'टीचर्स ऑफ बिहार' केवल एक समूह नहीं, बल्कि ऐसा मंच है, जहां शिक्षकों को अपनी प्रतिभा

दिखाने और नई शिक्षण विधियां सीखने का अवसर मिलता है। प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि संगठन शिक्षकों की समस्याओं को रचनात्मक मंच प्रदान करने के साथ-साथ सरकारी स्कूलों में हो रहे सकारात्मक कार्यों को भी व्यापक स्तर पर सामने ला रहा है। इवेंट लीडर केशव कुमार ने बताया कि संगठन की ओर से समय-समय पर राज्यस्तरीय वेबिनार, कार्यशालाएं और नवाचारी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन आयोजनों का उद्देश्य शिक्षकों के नेतृत्व कौशल को विकसित करना और उन्हें आधुनिक शिक्षण पद्धतियों से जोड़ना है। संगठन की प्रमुख विशेषताओं में बिहार के 38 जिलों के शिक्षकों को एक मंच पर जोड़ना, आईसीटी एवं टीएलएम निर्माण में प्रशिक्षण, स्कूलों की सफलता की कहानियों का प्रचार-प्रसार और डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना शामिल है। 'टीचर्स ऑफ बिहार' अपनी सक्रियता और रचनात्मक पहल के कारण राज्य के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बना रहा है। संगठन का मानना है कि शिक्षकों की सामूहिक पहल से सरकारी विद्यालयों की तस्वीर और शिक्षा व्यवस्था दोनों में सकारात्मक बदलाव संभव है।

स्कूली बच्चे भरेंगे हिन्दी ओलम्पियाड में उड़ान

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। राज्य के सभी स्कूलों तक अब अंतरराष्ट्रीय हिन्दी ओलम्पियाड एवं अमृत कुंभ सम्मान की जानकारी पहुंचेगी। इससे इसमें विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ेगी।

इसके लिए शिक्षा विभाग ने राज्य के सभी जिलों के जिला शिक्षा पदाधिकारियों को निर्देश दिया है। निर्देश प्राथमिक शिक्षा के उप निदेशक नीरज कुमार के हस्ताक्षर से जारी किये गये हैं। पत्र के मुताबिक हिंदी ओलंपियाड फाउंडेशन ने शैक्षणिक सत्र 2026–27 के लिए आयोजित किए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड एवं अमृत कुंभ सम्मान कार्यक्रम से संबंधित जानकारी विभाग को उपलब्ध करायी है। विभाग ने इस जानकारी को राज्य के सभी विद्यालयों तक पहुंचाने का निर्णय लिया है। जिला शिक्षा पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे नियमानुकूल कार्रवाई करते हुए इस संबंध में प्राप्त सूचना को अपने–अपने जिले के सरकारी एवं निजी विद्यालयों तक प्रेषित करें, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी इस प्रतियोगिता और सम्मान कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त कर सकें।

हिंदी ओलंपियाड फाउंडेशन द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में 1ली से 12वीं कक्षा तक के छात्र भाग ले सकेंगे। 1ली और 2री कक्षा के विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिता एक चरण में होगी, जबकि कक्षा 3री से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए परीक्षा तीन चरणों विद्यालय, क्षेत्रीय और अंतरराषट्रीय स्तर पर होगी। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र, पदक, ट्रॉफी और नकद पुरस्कार दिए जायेंगे। अमृत कुंभ सम्मान 2026 के तहत हिंदी शिक्षकों और प्रधानाचार्यों से कविता, कहानी, संस्मरण, निबंध, आत्मकथा, डायरी, यात्रा–वृत्तांत और एकांकी जैसी स्वरचित रचनाएं आमंत्रित की गयी हैं। फाउंडेशन के अनुसार अमृत कुंभ सम्मान के लिए रचनाएं 31 अक्तूबर तक भेजी जा सकती हैं।

शिक्षा विभाग ने सभी जिलों को निर्देश दिया है कि इस संबंध में जानकारी विद्यालयों तक पहुंचायी जाये, ताकि अधिक से अधिक छात्र और शिक्षक इसमें भाग ले सकें।

सुर्खियां

सरकारी स्कूलों के समर कैंप में खेल-खेल में भाषा और गणित सीख रहे बच्चे

सिटी रिपोर्टर • पटना

तपती दुपहरी, पारा 40 डिग्री के पार, और सरकारी स्कूलों में गर्मी की छुट्टियों का सन्नाटा... अमूमन जून के महीने में राज्य के स्कूलों की यही तस्वीर जेहन में आती है। लेकिन इस बार पटना के सरकारी स्कूलों का नजारा बिल्कुल बदला हुआ है। यहां छुट्टियों के सन्नाटे को चीरती बच्चों के ठहाकों की गूंज और तालियों की गड़गड़ाहट यह बताने के लिए काफी है कि समर कैंप का जादू बच्चों के सिर चढ़कर बोल रहा है। एनईपी-2020 के तहत बुनियादी साक्षरता को मजबूत करने के लिए बिहार शिक्षा विभाग और 'प्रथम' संस्था के सहयोग से राज्यभर में समर कैंप चल रहा है। पटना के पुनाईचक, राजवंशी नगर और अदालतगंज के स्कूलों में खेल-खेल में पढ़ाई की एक नई इबारत लिखी जा रही है।

मुश्किल सवाल चुटकियों में हल कर रही हैं छात्राएं

कन्या मध्य विद्यालय अदालतगंज के बरामदे में कदम रखते ही दीवारों से टकराती बच्चों की आवाजें सुनाई देती हैं। कक्षा 5-6 के बच्चे गोल घेरा में बैठे हैं। बीच में कुछ पर्चियां रखी हैं, जिन पर संख्याएं और जोड़-घटाव के सवाल लिखे हैं। एएसईआर-2024 की रिपोर्ट कहती है कि कक्षा 5 के कई बच्चों को गणित के बुनियादी सवालों में मदद की जरूरत है, लेकिन यहां वह डर कहीं नजर नहीं आता। एक स्वयंसेवक जैसे ही पहेली के अंदाज में तीन अंकों के भाग का सवाल उछालता है, छठी कक्षा की छात्रा झट से हाथ उठाकर कहती है- भैया, इसका जवाब मैं दूंगी। एक स्थानीय स्वयंसेवक बताते हैं कि शुरुआत में बच्चों को साधारण कहानियां पढ़ने और बड़े नंबरों को देखकर झिझक होती थी। लेकिन छह हफ्तों के इस सफर में, विशेषकर निर्देशात्मक गतिविधि ने उनका डर खत्म कर दिया है।

12 लाख बच्चे भर रहे भाषा–गणित में नयी उड़ान

बच्चों के बीच शिक्षक की भूमिका में नजर आये प्राथमिक शिक्षा निदेशक

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। बिहार सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा राज्यभर में संचालित समर कैम्प-2026 के अंतर्गत लगभग 82 हजार समर कैम्पों के माध्यम से 12 लाख से अधिक बच्चों को सीखने, पढ़ने और रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने का व्यापक अभियान चलाया जा रहा है। इस महत्वाकांक्षी पहल के अनुश्रवण के क्रम में प्राथमिक शिक्षा निदेशक विक्रम विरकर सोमवार को पुनाईचक बालक मध्य विद्यालय एवं कन्या मध्य विद्यालय तथा राजवंशी नगर नवीन पार्क मध्य विद्यालय पहुंचे।

बच्चों के बीच शिक्षक की भूमिका में प्राथमिक शिक्षा निदेशक नजर आये। उन्होंने बच्चों के साथ कहानियां सुनीं, कहानी के पात्रों एवं घटनाओं पर चर्चा की तथा उन्हें अपने विचार और अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। बच्चों ने भी पूरे उत्साह के साथ सहभागिता करते हुए अपनी समझ और कल्पनाशीलता का प्रदर्शन किया। उन्होंने बच्चों के साथ गणित की गतिविधि संख्या चक्र का संचालन किया। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों ने तार्किक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता और गणनात्मक दक्षताओं का प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि गतिविधि आधारित शिक्षण बच्चों में सीखने के प्रति उत्साह पैदा करता है और कठिन विषयों को भी सहज एवं आनंददायक बनाता है।

प्राथमिक शिक्षा निदेशक श्री विरकर ने कहा कि बिहार में संचालित समर कैम्प केवल एक शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि

बच्चों की सीखने की निरंतरता बनाए रखने का एक जन-अभियान बन चुका है। राज्य के विभिन्न जिलों में संचालित 82 हजार समर कैम्पों के माध्यम से 12 लाख से अधिक बच्चे पठन, लेखन, गणित, कला, खेल और संवाद आधारित गतिविधियों से लाभान्वित हो रहे हैं। यह पहल बच्चों को विद्यालय से जोड़े रखने, उनकी बुनियादी दक्षताओं को सुदृढ़ करने तथा सीखने को आनंददायक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने विशेष रूप से तालीमी मरकज़ (शिक्षा सेवक) एवं टोला सेवकों की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि उनकी सक्रिय भागीदारी के कारण समर कैम्प समुदाय के अंतिम छोर तक पहुंच रहा है। उनके सतत प्रयासों से बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित हो रही है तथा अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता भी बढ़ रही है। यही कारण है कि इतने बड़े पैमाने पर संचालित यह अभियान प्रभावी और सफल बन रहा है। समर कैम्प-2026 का उद्देश्य बच्चों में पढ़ने, लिखने एवं गणितीय दक्षताओं को सुदृढ़ करना, उनकी रचनात्मकता और अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करना तथा अवकाश अवधि में सीखने की प्रक्रिया को निरंतर बनाए रखना है। कैम्प में कहानी, खेल, कला, समूह चर्चा, गणितीय गतिविधियाँ और पठन-पाठन के माध्यम से बच्चों को सीखने के विविध अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। इस अभियान में प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन का भी महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। प्राथमिक शिक्षा निदेशक ने कहा कि 12 लाख से अधिक बच्चों तक पहुंचने वाला यह अभियान शिक्षा विभाग, विद्यालयों, तालीमी मरकज़, टोला सेवकों, स्वयंसेवकों एवं समुदाय के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रकार की पहल बच्चों में आत्मविश्वास, सीखने की रुचि और विद्यालय से जुड़ाव को और अधिक मजबूत करेगी। इस अवसर पर जिला शिक्षा पदाधिकारी साकेत रंजन, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी श्रीमती कृतिका वर्मा, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के राज्य समन्वयक मो. नैयर आलम, कार्यक्रम समन्वयक दीनानाथ कुमार सिन्हा, सरोज कुमार झा एवं गीता देवी उपस्थित रहे। उन्होंने समर कैम्प की गतिविधियों का अवलोकन किया तथा बच्चों, शिक्षकों एवं स्वयंसेवकों से संवाद कर कार्यक्रम की प्रगति की जानकारी प्राप्त की।

सरकारी प्राइमरी और मिडिल स्कूलों में वर्ग पांच और छह के छात्रों के लिए समर कैंप

खेल-खेल में रोचक-गतिविधियों से बच्चे सीखेंगे पढ़ना-लिखना

सीवान, हिन्दुस्तान संवाददाता। जिले के सरकारी प्राइमरी व मिडिल स्कूल के वर्ग पांच व छह के छात्र-छात्राओं को खेल-खेल में रोचक व सरल गतिविधियों के माध्यम से पढ़ना, लिखना व गणितीय सवालों को हल करने की विधा सिखाने के लिए कमाल का समर कैंप ग्रीष्मकालीन शिविर सोमवार से शुरू हुआ। जिले के 872 मध्य विद्यालय व 1167 प्राथमिक विद्यालयों में समर कैंप के लिए प्रत्येक केन्द्र पर 10-15 बच्चे वर्ग 5 व 6 के चिन्हित किए गए हैं।

समर कैंप का उद्देश्य वर्ग 5 व 6 के उन छात्र-छात्राओं पर विशेष रूप से फोकस करना है, जो कि हिन्दी व बुनियादी गणित में कमजोर हैं। बताया जा रहा कि समर कैंप के दौरान बच्चों के साथ विभिन्न रोचक व गतिविधि-आधारित शिक्षण प्रक्रियाएं अपनाई जाएंगी। इनमें शैक्षिक खेल, कहानी व अनुच्छेद गतिविधियां, बारहखड़ी, गिनती, पहाड़ा वाचन, हिन्दी डिक्शनरी गतिविधि, आज का सवाल, शब्द अंताक्षरी, संख्या चक्र, ताली-चुटकी, डबल-डबल, खुल जा सिम-सिम, हवा चल रही है, खोजो मेरे अक्षर व शब्द, मामा जी का घर आदि गतिविधियां शामिल हैं।

जिले के भगवानपुर हाट के मध्य विद्यालय सराय पड़ौली में समर कैंप में शामिल बच्चे व शिक्षक। • हिन्दुस्तान

- हिन्दी और बुनियादी गणित में कमजोर बच्चों पर विशेष रूप से किया जाएगा फोकस
- समर कैंप में बच्चों के साथ रोचक गतिविधि-आधारित शिक्षण प्रक्रियाएं अपनाई जाएंगी

1167 प्राथमिक और 872 मध्य विद्यालयों में 30 जून तक चलेगा समर कैंप

डीपीओ साक्षरता ने चार केन्द्रों पर किया उद्घाटन

कमाल का समर कैंप 2026 के पहले दिन डीपीओ साक्षरता अभिजीत कुमार सिंह ने पंचरुखी प्रखंड के मध्य विद्यालय मटक छपरा, भगवानपुर हाट मध्य विद्यालय सराय पड़ौली, मैरवा के मध्य विद्यालय इंग्लिश व हसनपुरा के मध्य विद्यालय हसनपुरा राजकीय में समर कैंप का उद्घाटन सोमवार को किया। इस दौरान समर कैंप के उद्देश्य, संचालन प्रक्रिया एवं अपेक्षित परिणामों पर विस्तार से चर्चा की गई। कमाल का समर कैंप का आयोजन शिक्षा विभाग व प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के साझा प्रयास से संचालित हो रहा है। उद्घाटन सत्र में मध्य विद्यालय, मटुक छपरा, पचरुखी में चिन्हित 15 बच्चे में सभी 15 की उपस्थिति रही। डीपीओ साक्षरता ने बताया कि समर कैंप का मुख्य उद्देश्य कक्षा 5 व 6 के उन बच्चों को सीखने का अतिरिक्त अवसर प्रदान करना है, जो किसी कारणवश अभी तक धारा प्रवाह पढ़ने में सक्षम नहीं हैं। इन बच्चों को चिन्हित कर पूरे जून माह में विशेष भाषा व गणित गतिविधियों के माध्यम से उनके सीखने के स्तर में सुधार किया जाएगा।

एक जून से 30 जून तक चलने वाले समर कैंप में करीब 1500 स्वयंसेवक व 288 शिक्षा सेवक-तालीमी मरकज की सहभागिता सुनिश्चित की गई है। प्रत्येक स्वयं सेवक व शिक्षा सेवक 10 से 15 ऐसे बच्चों के साथ प्रतिदिन सुबह 7 बजे से 9 बजे तक दो घंटे की अवधि में भाषा व गणित आधारित कक्षाओं का संचालन करेंगे। उद्घाटन कार्यक्रम में सीवान सदर समेत सभी प्रखंडों के बीईओ, गुणवत्ता शिक्षा के समन्वयक हरिश्चंद्र प्रसाद, समावेशी शिक्षा प्रभारी, राजीव रंजन, मध्य विद्यालय मटुक छपरा के प्रधानाध्यापक श्रीकांत कुमार, विद्यालय के शिक्षक अरुण कुमार शर्मा, अर्चना उपाध्याय, लक्ष्मी देवी, ऊषा देवी, किरण कुमारी, रिटायर्ड शिक्षिका कांति देवी विद्यालय शिक्षा समिति के अध्यक्ष हरेश कुमार यादव, ग्राम पंचायत राज पपौर के मुखिया मिंटू तिवारी, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के डिविजनल को-ऑर्डिनेटर हेमंत कुमार, एफएलएन समर कैंप जिला साधन से पूनम तिवारी, पुष्कर कुमार विश्वकर्मा, विक्की राज, साक्षी द्विवेदी, संबंधित विद्यालय के एचएम, शिक्षक, स्वयंसेवक, शिक्षा सेवक, तालीमी मरकज, जनप्रतिनिधि व प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

बेसलाइन मूल्यांकन : समर कैम्प के शुरू में सभी चिन्हित बच्चों का बेसलाइन मूल्यांकन किया जाएगा। साथ ही इसकी रिपोर्ट स्वयं सेवक वेब लिंक पोर्टल पर अपलोड करेंगे। राज्य व जिला स्तर से प्रतिदिन बच्चों के लिए डिजिटल कंटेंट भी उपलब्ध कराया जाएगा। प्रत्येक शनिवार को बच्चों द्वारा कहानी आधारित रोल-प्ले गतिविधि का आयोजन किया जाएगा।

राज्य के मॉडल स्कूलों में कोचिंग की विशेष व्यवस्था की जाएगी

रिमेडियल कक्षाएं भी अनिवार्य रूप से चलेंगी, जरूरतमंद छात्रों पर रहेगा विशेष ध्यान

शिक्षा में सुधार

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। राज्य सरकार ने ऐसे तो कोचिंग संस्थानों पर नकेल कसना प्रारंभ कर दिया है, लेकिन इसकी व्यवस्था सरकारी विद्यालयों में ही करने की योजना बनायी है। मॉडल स्कूल में कोचिंग की भी व्यवस्था होगी। यहां रिमेडियल कक्षाएं भी अनिवार्य रूप से चलेंगी। इसके तहत जरूरतमंद छात्रों का विशेष ध्यान रखा जाएगा। जिस विषय में वे कमजोर होंगे, उन्हें उसकी तैयारी विशेष रूप से करायी जाएगी। शिक्षा विभाग ने इसकी व्यापक कार्ययोजना तैयार की है।

राज्य सरकार ने सभी प्रखंडों में मॉडल स्कूल खोलने की योजना बनायी है। इसके तहत प्रत्येक प्रखंड में एक-एक उच्च माध्यमिक विद्यालय को आदर्श विद्यालय बनाना है। ये विद्यालय सही मायने में मॉडल होंगे और यहां पढ़ने वाले बच्चों को हर तरह की शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएंगी। उन्हें वर्ग में तो बेहतर शिक्षा मिलेगी ही, आवश्यकता पड़ने पर उन्हें विशेष कोचिंग की भी सुविधा दी जाएगी। कमजोर और जरूरतमंद बच्चों के लिए अनिवार्य रूप से रिमेडियल कक्षाएं भी चलेंगी। इसमें बच्चों के संशय का निदान किया जाएगा। उन्हें प्रैक्टिस करने का भी अवसर मिलेगा।

ऐसे तो मॉडल स्कूल में बच्चों और शिक्षकों दोनों का चयन एक मानक प्रक्रिया के तहत करने का प्रावधान बनाया गया है। बच्चों की शैक्षणिक आवश्यकता को देखते हुए उन्हें विद्यालयी शिक्षा के अलावा वैकल्पिक शिक्षा का भी अवसर मिलेगा। इसके लिए विद्यालय के शिक्षकों को ही इसकी जिम्मेवारी दी जाएगी। विशेष कोचिंग या फिर रिमेडियल कक्षाओं का संचालन विद्यालय के शिक्षक ही करेंगे। विद्यालय की कार्य प्रणाली, बच्चों की संख्या और जरूरत को देखकर कोचिंग और रिमेडियल कक्षा की समय-सारणी तैयार होगी।

- प्रखंडों में खोला जाना है मॉडल स्कूल, एक उच्च माध्यमिक विद्यालय को आदर्श बनाना है

मॉडल स्कूल के बच्चों को हर वर्ग में बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया जाएगा

शिक्षा विभाग के अधिकारी के अनुसार मॉडल स्कूल के बच्चों को हर वर्ग में बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया जाएगा। यहां के प्रयोग के सफल होने पर उसका कार्यान्वयन अन्य विद्यालयों में भी किया जाएगा। हमारी योजना यह है कि यहां के बच्चों को अपनी शैक्षणिक जरूरतों के लिए विद्यालय के संसाधन के अलावा किसी अन्य विकल्प पर निर्भर न रहना पड़े। उनकी सारी शैक्षणिक जरूरतें विद्यालय के स्तर पर ही पूरी हो जाये।

बच्चों में सीखने के स्तर को बेहतर बनाने के लिए मेंटरिंग व्यवस्था लागू

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। राज्य में सरकारी प्राइमरी एवं मिडिल स्कूलों के 1ली से 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को बेहतर बनाने के उद्देश्य से मेंटरिंग आधारित व्यवस्था लागू की गयी है।

इसके लिए शिक्षा विभाग द्वारा चार अलग-अलग व्हाट्सएप चैनल बनाये गये हैं। पहला चैनल फाउंडेशनल स्टेज (1ली एवं 2री कक्षा) के लिए है। दूसरा चैनल प्रिपरेटरी स्टेज (3री से 5वीं कक्षा) के के लिए है। तीसरा चैनल मिडिल स्टेज (6ठी से 8वीं कक्षा) के लिए है। और, चौथा चैनल कॉम्प्लेक्स रिसोर्स सेंटर (सीआरसी) के लिए है। इस चैनलों से संबंधित अधिकारियों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों को जोड़ा जायेगा। इसके जरिये शिक्षकों को नियमित शैक्षणिक सहयोग, मार्गदर्शन और आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध करायी जायेंगी। इस बाबत प्राथमिक शिक्षा निदेशक विक्रम विरकर ने इस संबंध में सभी जिला शिक्षा पदाधिकारियों, जिला कार्यक्रम पदाधिकारियों, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारियों तथा शिक्षक शिक्षा संस्थानों के प्राचार्यों को निर्देश जारी किया है। इसके मुताबिक मेंटरिंग व्यवस्था को मजबूत करने और शिक्षण गतिविधियों के प्रभावी संचालन के लिए यह कदम उठाया गया है। इसके तहत 1ली से 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को बेहतर बनाने के उद्देश्य से मेंटरिंग आधारित व्यवस्था लागू की जा रही है। विभाग ने प्रत्येक चैनल के लिए क्यूआर कोड और लिंक उपलब्ध कराया है। निर्देश में कहा गया है कि सभी संबंधित अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि उनके अधीन कार्यरत शिक्षक और प्रधानाध्यापक निर्धारित चैनलों से जुड़ जायें। निर्देश के मुताबिक इन चैनलों के माध्यम से संबंधित अधिकारियों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और संसाधन केंद्रों के प्रभारी आपस में जुड़कर शैक्षणिक गतिविधियों, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और मॉनिटरिंग से संबंधित सूचनाओं का आदान-प्रदान करेंगे। सभी जिला एवं प्रखंड स्तरीय अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्र के शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों को व्हाट्सएप चैनलों से जोड़ने की प्रक्रिया जल्द पूरा करने का निर्देश दिया गया है।

मिडिल स्कूलों में गुणवत्ता शिक्षा को चलेगा मिशन

प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग कार्यक्रम का प्रभावी तरीके से होगा कार्यान्वयन

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। राज्य के मिडिल स्कूलों में चल रहे प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग कार्यक्रम को और प्रभावी बनाया जायेगा। इसमें मिडिल स्कूल मिशन के क्रियान्वयन पर जोर होगा।

नयी शिक्षा नीति, 2020 बच्चों में तार्किक चिंतन और वैज्ञानिक सोच विकसित करने पर जोर देता है। इसी अवधारणा के तहत शिक्षा विभाग द्वारा सभी मिडिल स्कूलों में प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। मिडिल स्कूल मिशन के क्रियान्वयन के तहत राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् तथा बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् क्के नेतृत्व में मंत्राफोरचेंज के सहयोग से दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें बिहार के सभी जिलों के शिक्षा शिक्षक समन्वयक एवं जिला तकनीकी दल के सदस्य शामिल हुए। इसका मुख्य उद्देश्य जिला नेतृत्वकर्ता को मिडिल स्कूल मिशन एवं परख लक्ष्यों के साथ संरेखित करना था। जिला स्तर पर शैक्षणिक सुधार हेतु कार्य करने में सहयोग एवं विद्यालय स्तर पर कार्यक्रम का प्रभाव सुनिश्चित करने हेतु वार्षिक कार्ययोजना तैयार करना था।

इसमें प्रभावी पीएलसी (प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी) मॉडल तथा मेंटरिंग को और अधिक प्रभावी बनाने पर गहन विमर्श हुआ। मिडिल स्कूल मिशन एवं विजन पर चर्चा हुई। विगत वर्ष में कार्यक्रम की उपलब्धियों एवं चुनौतियों पर गौर किया गया। कार्यक्रम के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान कर उनकी भूमिका एवं जिम्मेदारियों पर भी चर्चा हुई। मेंटरिंग में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को लेकर चर्चा की गयी, ताकि प्रतिभागी ब्लॉक-कॉम्प्लेक्स स्तर पर शिक्षकों की सीख, विचार-विमर्श और समस्या समाधान में मदद मिले। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के विभागाध्यक्ष डॉ. स्नेहाशीष दास ने परख संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियों को साझा किया।

बिहार राज्य शिक्षा परियोजना परिषद के राज्य परियोजना पदाधिकारी मेहताब रहमानी ने कहा कि पूरे साल के कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए हमे खुद को भी तैयार होना होगा जिससे हम अपने लक्ष्य को पा सकेंगे। हर जिले द्वारा अपनी ओर से ब्लॉक कवरेज, समर्थन संरचना, समयसीमा और कार्यान्वयन अनुशासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त किया गया। इससे योजना बनाना ही नहीं, बल्कि उसके लिए प्रभावी क्रियान्वयन की जिम्मेदारी भी जिला स्तर पर सुनिश्चित हो सकेगी।

अभिभावकों ने लिया संकल्प हमारा बच्चा–हमारी जिम्मेदारी

सूबे के प्रारंभिक स्कूलों में हुई अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। राज्य के प्रारंभिक विद्यालयों में शनिवार को उत्सव का माहौल रहा। इन स्कूलों में 1ली से 8वीं कक्षा में पढ़ रहे करोड़ों बच्चों के अभिभावकों ने पहुंच कर 'हमारा बच्चा, हमारी जिम्मेदारी' का संकल्प लिया।

यह संकल्प सभी 70 हजार प्रारंभिक विद्यालयों में शनिवार को हुई अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी में लिया गया। शिक्षा विभाग के प्राथमिक शिक्षा निदेशक विक्रम विरकर के निर्देश के अनुरूप प्रारंभिक विद्यालयों में 'हमारा बच्चा, हमारी जिम्मेदारी' थीम पर अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी हुई। इसमें शामिल होने के लिए स्कूलों द्वारा 1ली से 8वीं कक्षा में नामांकित बच्चों के अभिभावकों को बकायदा न्योता भेजा गया था। ऐसी व्यवस्था की गयी थी कि अधिक से अधिक अभिभावक सक्रिय रूप से संगोष्ठी में आयें। तय समय पर स्कूलों के प्रवेश द्वार पर अभिभावकों का स्वागत और उनकी आगवानी के लिए शिक्षकों के साथ प्रधानाध्यापक-प्रधान शिक्षक खड़े थे। उसके बाद अभिभावकों को उन

वर्गकक्षों में ले जाया गया, जिनमें उनके बच्चे पढ़ते हैं। फिर, वर्गवार अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी शुरू हुई। अभिभावकों को इस बात से अवगत कराया गया कि बच्चों के अधिगम एवं विकास की प्रक्रिया में विद्यालय और अभिभावक दोनों की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है। अभिभावकों को बच्चों की स्कूल में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित कराने तथा घर पर पढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने हेतु प्रेरित किया गया, ताकि बच्चे नियमित रूप से स्कूल आयें और सीखने की प्रक्रिया में भागीदार बनें। शिक्षकों द्वारा अभिभावकों को इस बात के लिए प्रेरित किया गया कि बच्चे नियमित रूप से स्कूल आयें। अभिभावकों के साथ बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता पर चर्चा हुई। अभिभावकों को बताया गया कि बच्चों को नाश्ता करा कर ही स्कूल भेजें।

अभिभावकों के स्वागत में स्कूलों के प्रवेश द्वार पर बैनर लगाये गये थे। हर वर्ग कक्ष में ब्लैकबोर्ड पर भी अभिभावकों के स्वागत में चौक से वाक्य लिखे गये थे। संगोष्ठी में शामिल होने को लेकर अभिभावकों में काफी उत्साह था। उत्साहित अभिभावकों में महिलाएं भी थीं। इसका महत्व इसलिए भी था कि स्कूलों में नये शैक्षिक सत्र में यह पहली अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी थी।

सूबे के सभी प्राइमरी स्कूलों में मनेगा सात दिनों का पठन पर्व

भाषा दक्षता के विकास को मिलेगी गति, पठन संस्कृति को मिलेगा बढ़ावा

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। मिशन निपुण के पांच वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में राज्य के सभी प्राइमरी स्कूलों में एक से सात जुलाई तक पठन पर्व का आयोजन किया जायेगा। हर दिन कहानी, हर बच्चे की जुबानी थीम पर आधारित मिशन निपुण बिहार के इस विशेष अभियान का उद्देश्य बच्चों में पठन संस्कृति को प्रोत्साहित करना तथा भाषा दक्षता के विकास को गति देना है।

कार्यक्रम के तहत दूसरी कक्षा के सभी बच्चे रोज 15 मिनट तक अपनी पसंदीदा भाषा- हिन्दी, उर्दू, बांग्ला, मैथिली या अंग्रेजी में कहानी, कविता या अनुच्छेद का जोर-जोर से वाचन करेंगे। पठन सामग्री का चयन सिलेबस के अलावा स्कूल की लाइब्रेरी में उपलब्ध पुस्तकों एवं अन्य पठन सामग्रियों से किया जायेगा। सामग्री का चयन बच्चों की आयु व कक्षा के अनुरूप स्कूल के शिक्षक करेंगे। पठन पर्व को अधिक प्रभावी बनाने के लिए उच्चतर कक्षाओं के विद्यार्थी छोटे बच्चों को जरूरत के अनुसार वाचन में सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जो बच्चे किसी कारणवश स्कूल में उपस्थित नहीं हो सकेंगे, उनके लिए घर से ही सहभागिता की व्यवस्था की गई है। स्कूल के शिक्षक अपने पोषण क्षेत्र के बच्चों के अभिभावकों को व्हाट्सएप के माध्यम से कहानियां, कविताएं एवं अन्य पठन सामग्री उपलब्ध कराएंगे तथा जरूरी दिशा-निर्देश साझा करेंगे। अभिभावकों को अपने बच्चों के पठन संबंधी वीडियो रिकॉर्ड कर स्कूल के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इन वीडियो को शिक्षक एवं शैक्षणिक समूहों के बीच प्रेरक उदाहरण के रूप में साझा किया जाएगा ताकि बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि और उत्साह का वातावरण बने। कार्यक्रम के सफल संचालन एवं व्यापक जनभागीदारी सुनिश्चित करने के लिए पठन पर्व का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा। शिक्षा विभाग के सोशल मीडिया मंचों पर भी विशेष अभियान चलाया जाएगा तथा निपुण बिहार हैशटैग के जरिये आमजन, अभिभावकों और बच्चों की सक्रिय सहभागिता तय की जायेगी।

शिक्षा विभाग की ओर से इस आशय का पत्र सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (समग्र शिक्षा) और प्रखंड शिक्षा पधाधिकारियों को भेजा गया है और अपने क्षेत्र के प्राइमरी स्कूलों में पठन पर्व का सफल आयोजन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है। विभाग को विश्वास है कि %पठन पर्व% बच्चों में पढ़ने की आदत को सुदृढ़ करेगा।

डॉक्टर बनना है या इंजीनियर नौवीं में ही बच्चे चुनेंगे कॅरियर

बिहार में प्रतिभा तराशी जाएगी, मेडिकल-इंजीनियरिंग की तैयारी को विशेष कक्षाएं चलेंगी

मॉडल स्कूल

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहारी प्रतिभा अब उच्च विद्यालयों में ही तराशे जाएंगे। राज्य सरकार ने अपने प्रतिभावान बच्चों को मैट्रिक के पहले नौवीं कक्षा से ही कॅरियर चुनने का अवसर उपलब्ध कराएगी। उन्हें डॉक्टर बनना या इंजीनियर, यह तय कर सकेंगे। राज्य सरकार ने इसकी तैयारी कर ली है। मॉडल स्कूल से इसका प्रारंभिक प्रयोग प्रारंभ होगा। प्रयोग सफल होने पर आगे इसका विस्तार किया जाएगा।

शिक्षा विभाग मॉडल स्कूल को बच्चों की प्रतिभा निखारने का प्लेटफॉर्म बनाना चाहता है। विभाग ने कक्षा 9वीं से ही इच्छुक बच्चों को मनपसंद कॅरियर चुनने और इसके लिए विशेष अध्ययन की व्यवस्था करने की योजना बनाई है। उन्हें 9वीं से ही मेडिकल और इंजीनियरिंग की तैयारी के लिए सुविधा मिलेगी। उनके लिए न केवल विशेष कक्षाएं चलेंगी, बल्कि हर तरह की शैक्षणिक मदद की जाएगी। वे नियमित वर्ग के बाद मेडिकल या इंजीनियरिंग की तैयारी की बुनियादी पढ़ाई कर सकेंगे। सामान्यतः मैट्रिक के बाद यानी 11वीं में बच्चे तय करते हैं कि उन्हें विज्ञान, कला या फिर वाणिज्य की दिशा में आगे बढ़ना है। अगर विज्ञान का चयन करते हैं तो इसमें भी दो विकल्प गणित या जीव विज्ञान का रहता है। इन दोनों से मेडिकल या इंजीनियरिंग का कॅरियर चुन पाते हैं। अब सरकार ने मॉडल स्कूल के जरिये बच्चों को 9वीं में ही तैयार करने की योजना बनायी है। विभाग के मुताबिक, इस सुविधा से बच्चों को कॅरियर बनाने में काफी मदद मिलेगी।

09 वीं से बारहवीं तक की पढ़ाई होगी प्रदेश के मॉडल स्कूलों में

- नियमित कक्षाओं के बाद तैयारी कर सकेंगे विद्यार्थी

राज्य में 534 मॉडल स्कूल खुलेंगे

बिहार सरकार ने सात निश्चय-तीन के तहत राज्य के सभी 534 प्रखंडों में एक-एक अत्याधुनिक मॉडल स्कूल खोलने का निर्णय लिया है। यह सरस्वती विद्या निकेतन के नाम से जाना जाएगा। इन स्कूलों में कॉन्वेंट से बेहतर विश्वस्तरीय शिक्षा और सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। इन उच्च विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 तक की पढ़ाई होगी। कक्षा 9 में नामांकन प्रवेश परीक्षा के माध्यम से मेरिट लिस्ट के आधार पर होगा।

“ हम मॉडल स्कूल को सही मायने में बेहतर शैक्षणिक केन्द्र बनाना चाहते हैं। हमारा लक्ष्य है कि बच्चों को वहां न केवल उन्नत शिक्षा और अन्य सारी सुविधा मिले, बल्कि उन्हें बेहतर कॅरियर चुनने में भी मदद मिले।

– मिथिलेश तिवारी, शिक्षा मंत्री

मौर्य ध्वज एक्सप्रेस

मुजफ्फरपुर हिन्दी साप्ताहिक

खबरों का संसार

RNI NO:- BIHHIN/2017/74970

28 मार्च 2026 (शनिवार) मुजफ्फरपुर | वर्ष -9 अंक-12 | मूल्य- रु. 2/- कुल पृष्ठ-8

टीचर्स ऑफ बिहार की अभिनव पहल: प्रज्ञानिका का भव्य प्रकाशन

डॉ॰विपिन बिहारी मौर्य, को-ऑर्डिनेटर मौर्य ध्वज एक्सप्रेस, बिहार।

पटना।

बिहार दिवस के पावन अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका प्रज्ञानिका के द्वितीय खंड के प्रथम अंक का भव्य प्रकाशन किया गया। यह पत्रिका राज्य के शिक्षा जगत में नवाचार, संवाद और रचनात्मकता को बढ़ावा देने की दिशा में एक सशक्त कदम मानी जा रही है।

शिक्षा जगत के लिए प्रेरणादायक पहल

प्रज्ञानिका केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि बिहार के शिक्षकों, छात्रों और शिक्षा विभाग के बीच संवाद का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। इसमें शिक्षकों के अभिनव प्रयोग, सफलता की कहानियां, छात्रों की प्रतिभा और शिक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों को प्रमुखता से स्थान दिया गया है।

गरिमामय समारोह में हुआ औपचारिक विमोचन

पटना में आयोजित एक भव्य समारोह में पत्रिका की संपादन टीम द्वारा बिहार शिक्षा विभाग के शीर्ष अधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों को प्रज्ञानिका की प्रथम प्रति सादर भेंट की गई।

प्रति भेंट प्राप्त करने वाले प्रमुख अधिकारी:-

विक्रम वीरकर, निदेशक, प्राथमिक शिक्षा नवीन कुमार, राज्य परियोजना निदेशक उदय कुमार उज्ज्वल, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, बीईपीसी साकेत रंजन, जिला शिक्षा पदाधिकारी पटना बैद्यनाथ यादव, पूर्व शिक्षा विभाग सचिव सभी अधिकारियों ने पत्रिका की सराहना करते हुए इसे शिक्षकों के सशक्तिकरण और शिक्षा सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण मंच बताया।

समर्पित संपादन टीम की मेहनत

प्रज्ञानिका की सफलता के पीछे एक समर्पित टीम का योगदान है: प्रधान संपादक: डॉ. नंदन श्रीवास्तव सह-संपादक: शुभी श्रीवास्तव एवं डॉ. पूनम कुमारी संपादक: डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय पाठ शोधक: ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन तकनीकी सहयोग: शिव कुमार

सहयोगी सदस्य:

अनुपमा प्रियदर्शिनी, मृत्युंजय, रंजेश कुमार, मधु प्रिया, मृत्युंजय कुमार, केशव कुमार, अजय कुमार मीत, अभिषेक कुमार, पुष्प प्रसाद।

उद्देश्य और भविष्य की दिशा

पत्रिका का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को एक ऐसा मंच प्रदान करना है जहाँ वे अपने अनुभव, नवाचार और विचार साझा कर सकें। इससे शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव और गुणवत्ता सुधार की उम्मीद की जा रही है।

संस्थापक एवं टीम का संयुक्त बयान

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा: प्रज्ञानिका हमारे शिक्षकों की रचनात्मकता और नवाचार का आईना है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक आंदोलन है, जो शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। हमें विश्वास है कि यह मंच आने वाले समय में और अधिक प्रभावशाली बनेगा और राज्य के हर शिक्षक व छात्र को प्रेरित करेगा।

प्रदेश प्रवक्ता एवं मीडिया संयोजक का बयान

प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से कहा: प्रज्ञानिका शिक्षकों की आवाज को मंच देने का एक सशक्त प्रयास है। यह पत्रिका न केवल शिक्षकों के नवाचार को सामने लाती है, बल्कि शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा भी तय करती है। हम सभी शिक्षकों से अपील करते हैं कि वे इससे जुड़कर अपने अनुभव साझा करें और इस अभियान को और मजबूत बनाएं।

निष्कर्ष..

प्रज्ञानिका का यह अंक न केवल एक प्रकाशन है, बल्कि बिहार के शिक्षा जगत में नई ऊर्जा, नवाचार और संवाद का प्रतीक बन चुका है। यह पहल निश्चित रूप से आने वाले समय में शिक्षा की गुणवत्ता को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में सहायक सिद्ध होगी।

चित्र वीथिका

- पुष्पा प्रसाद

मध्य विद्यालय सिमराहा फारबिसगंज, अररिया

आदर्श मध्य विद्यालय बलुआ बाजार, छातापुर, सुपौल

प्राथमिक विद्यालय गिरजानंद झा टोला, नरपतगंज, अररिया

प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर मुसहरी, झंझारपुर, मधुबनी

राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट, गोपालगंज

प्राथमिक विद्यालय रामराय बाग, खुटहरी, कहलगांव, भागलपुर

चित्र वीथिका

मध्य विद्यालय दीननगर, पुरैनी, जगदीशपुर, भागलपुर

न्यू प्राथमिक विद्यालय सिरमाटीकर ,बाराहाट, बांका

आदर्श प्राथमिक विद्यालय मिल्की यादव टोल, वारिसनगर, समस्तीपुर

न०प्राथमिक विद्यालय हलीमचक, हसपुरा, औरंगाबाद

प्राथमिक विद्यालय उत्तर टोला भान, मधेपुरा

उ० म० वि० विश्वम्भरपट्टी पश्चिमी कटरा, मुज़फ्फरपुर

अगर आप एक शिक्षक या शिक्षा के अन्य हितधारक हैं और शिक्षा में अपने नवाचार, अनुभव या विचारों को साझा करना चाहते हैं, तो 'प्रज्ञानिका' आपके लिए एक बेहतरीन मंच है।
इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने शैक्षिक प्रयोगों, अध्यापन पद्धतियों और नवाचारों को पूरे देश में पहुँचा सकते हैं।

आपको यह अंक कैसा लगा? अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें -
https://forms.gle/WPHrN8f1wuPsUTBXA

हमसे जुड़ने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें।

व्हाट्सएप से जुड़ने के लिए क्लिक करें

PRAGYANIKA
WhatsApp group

ईमेल: writers.teachersofbihar@gmail.com
वेबसाइट : www.teachersofbihar.org/pragyanika

PRAGYANIKA
WhatsApp group

Facebook Group
@teachersofbihar

X
@teachersofbihar

Instagram
@teachersofbihar

YouTube
@teachersofbihar

@group/teachersofbihar
@teachersofbihar
@teachersofbihar
@teachersofbihar